لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿۱۴۸﴾ اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا
اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ﴿۱۴۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ وَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ
يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ وَ يَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّ نَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ
سَبِيْلًا ﴿۱۵۰﴾ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿۱۵۱﴾ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ وَ لَمْ
يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۵۲﴾ ع

आयत न० 148 से 152

अल्लाह तआ़ला बुरी बात ज़बान पर लाने को (किसी के लिए) **पसन्द नहीं करते सिवाए मज़लूम के** (यानी जिस पर जुल्म किया गया हो वो अपने जुल्म के बारे में शिकायत करने लगे तो वो गुनाह नहीं)**, और अल्लाह तआ़ला** (मज़लूम की बात) **अच्छी तरह सुनते हैं** (और ज़ालिम के जुल्म की हालत) **अच्छी तरह जानते हैं(148) अगर नेक काम खुला करो या उस को छुपा कर करो या** (ख़ास कर) **किसी** (की) **बुराई को मुआफ़ कर दो तो** (ज़्यादा अच्छा है क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला** (भी) **बड़े मुआ़फ़ करने वाले हैं** (इसके बावजूद कि अपने मुजरिमों को सज़ा देने की पूरी) **कुदरत रखते हैं(149) जो लोग कुफ़्र करते हैं अल्लाह तआ़ला के साथ और उसके पैग़म्बरों के साथ और यह चाहते हैं कि अल्लाह के और उसके पैग़म्बरों के बीच** (ईमान लाने) **में फ़र्क़ रक्खें और कहते हैं कि हम** (पैग़म्बरों में से) **कुछ पर तो ईमान लाते हैं और कुछ का इनकार करते हैं और यह चाहते हैं कि बीच की एक राह निकाल लें** (कि न सब पर ईमान रहे जैसे मुसलमान सब पर ईमान रखते हैं और न सब का इनकार रहे जैसा कि मुशरिक लोग करते थे)(150) **ऐसे लोग बेशक काफ़िर हैं** (क्योंकि कुछ पैग़म्बरों का इनकार भी कुफ़्र है)**, और काफ़िरों के लिए हम ने रूसवाई भरी सज़ा तैयार कर रक्खी है(151) और जो लोग अल्लाह तआ़ला पर ईमान रखते हैं और उसके सब पैग़म्बरों पर भी और उनमें से किसी में** (ईमान लाने में) **फ़र्क़ नहीं करते ऐसे लोगों को अल्लाह तआ़ला ज़रूर उन का सवाब देंगे, और** (चूंकि) **अल्लाह तआ़ला बड़े मुआ़फ़ करने वाले हैं** (इसलिए ईमान लाने से पहले जितने गुनाह हो चुके हैं सब मुआफ़ कर देंगे और ईमान की बरकत से उन की नेकियों को बढ़ा कर बहुत सवाब देंगे क्योंकि वो) **बड़े रहमत वाले हैं**(152)

नोटः- जो आदमी अल्लाह के किसी एक रसूल का भी इनकार करे वो खुला काफ़िर है और उस के

लिए सदा का जहन्नम का अज़ाब है अल्लाह पर ईमान तब तक पूरा नहीं जब तक रसूल पर ईमान न हो।

يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْۤا اَرِنَا اللّٰهَ
جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَ
اٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿۱۵۳﴾ وَ رَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَ قُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّ قُلْنَا
لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِى السَّبْتِ وَ اَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿۱۵۴﴾

आयत न० 153 से 154

(ऐ पैग़म्बर) **आप से किताब वाले** (यहूदी लोग) **यह मांग करते हैं कि आप उन के पास एक ख़ास लिखी हुई किताब आसमान से मंगवादें तो** (यह कोई नई बात नहीं है क्योंकि इन के बड़ों में से जो लोग मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में थे) **उन्होंने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **से इससे भी बड़ी बात की मांग की थी और यह कहा था कि हम को अल्लाह तआला को खुली आंखों दिखा दो जिस पर उन की बेअदबी की वजह से कड़क बिजली की आपड़ी, फिर** (इससे बढ़ कर यह कि) **उन्होंने बछड़े को** (इबादत के लिए) **बना लिया था इस के बाद कि** (दीन की सच्चाई की) **बहुत सी निशानियां उन को पहुंच चुकी थीं** (यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मोजिज़े) **फिर** (भी) **हम ने उन को मुआफ़ कर दिया, और मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को हम ने बड़ा रौब दिया था(153) और** (जब उन्होंने तौरेत को मानने से इनकार किया तो) **हम ने तूर पहाड़ उठा कर उन के सरों पर लटका दिया उन से वादा लेने के वास्ते और हम ने** (उन से यह भी) **कहा** (कि ऐलिया शहर के) **दरवाज़े में लाचारी से सर झुकाए हुए दाख़िल हों और हम ने** (उन से यह भी) **कहा कि** (शिकार करके) **ज़्यादती मत करो हफ़्ते के दिन में और हम ने उन से पक्का वादा लिया था(154)**

नोटः- यहूदियों के कुछ सरदारों ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मांग की थी कि जिस तरह मूसा अलैहिस्सलाम पर लिखी हुई किताब आसमान से उतरी थी इसी तरह एक किताब आप भी आसमान से लाएं तो हम ईमान ले आएं उन की यह मांग इसलिए नहीं थी कि वो दिल से ईमान लाना चाहते थे और यह उन की एक शर्त थी बल्कि वो हटधर्मी और ज़िद की वजह से

कोई न कोई बहाना करते ही रहते थे अल्लाह तआ़ला ने ये आयतें उतार कर उन की असलीयत बता दी।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَ كُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ قَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّ قَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۪﴿۱۵۵﴾ وَّ بِكُفْرِهِمْ وَ قَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا ﴿۱۵۶﴾ وَّ قَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَ مَا قَتَلُوْهُ وَ مَا صَلَبُوْهُ وَ لٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ وَ اِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ؕ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَ مَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ۙ﴿۱۵۷﴾ بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۱۵۸﴾ وَ اِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ وَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ﴿۱۵۹﴾ۚ

आयत न० 155 से 159

सो हम ने (उन की हरकतों की वजह से लानत व रूसवाई व सूरत बदलने की) **सज़ा में पकड़ा** (यानी) **उनके वादा तोड़ने की वजह से और अल्लाह के हुक्मों का इनकार करने** (की वजह से) **और नबियों के नाहक़ क़त्ल करने** (की वजह से) **और उन के इस बयान** (की वजह से) **कि हमारे दिल** (ऐसे) **हिफ़ाज़त में** (हैं कि उन में दूसरे मज़हब यानी इस्लाम का असर नहीं होता तो मज़हब मे हम पक्के) **हैं,** (अल्लाह तआ़ला इस बात को ग़लत बताते हैं कि यह मज़बूती नहीं है) **बल्कि उन के कुफ़्र की वजह से उन के दिल पर अल्लाह तआ़ला ने बन्द लगा दिया है** (कि सच बात का उन पर असर नहीं होता) **सो ये बहुत थोड़ा ईमान लाते हैं** (बस थोड़ा ईमान क़ुबूल नहीं बस काफ़िर ही ठहरे)(155) **और** (हम ने उन को सज़ा में पकड़ा) **उन के** (एक ख़ास) **कुफ़्र की वजह से और** (वो यह कि हज़रत) **मरयम** (अलैहिस्सलाम) **पर उन के बड़ा भारी झूटा इल्ज़ाम रखने की वजह से** (जिससे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को भी झुटलाया जाता है क्योंकि ईसा अलैहिस्सलाम अपने मोजिज़े से उन को इल्ज़ाम से बरी कर चुके हैं)(156) **और उन के यह कहने की वजह से कि हम ने मसीह ईसा बिन मरयम** (अलैहिस्सलाम) **को जो कि अल्लाह के पैग़म्बर हैं क़त्ल कर दिया** (और यह कहना सबूत है दुशमनी का और नबियों से दुशमनी कुफ़्र है)**, हालांकि** (उन का यह दावा कुफ़्र होने के साथ ग़लत भी है क्योंकि) **उन्होंने** (यानी यहूदियों ने) **न उन को** (यानी ईसा अलैहिस्सलाम को) **क़त्ल किया और न उन को सूली दे पाए लेकिन उन को** (यानी यहूदियों को) **शुबह हो गया, और जो लोग** (किताब वालों में से) **उन के** (यानी ईसा अलैहिस्सलाम

के) **बारे में अलग-अलग बातें करते हैं वो शक में पड़े हैं, उनके पास इस पर कोई** (सही) **सबूत** (मौजूद) **नहीं सिवाए अटकली बातों पर चलने के और उन्होंने** (यानी यहूदियों ने) **उन को** (यानी ईसा अलैहिस्सलाम) **को बेशक क़त्ल नहीं किया** (जिस का वो दावा करते हैं)(157) **बल्कि उन को अल्लाह तआला ने अपनी तरफ़** (यानी आसमान पर) **उठा लिया** (और एक दूसरे आदमी को उन का हम शकल बना दिया और उस को फांसी हुई और वो क़त्ल हुआ और इसी वजह से उन को शक हुआ), **और अल्लाह तआला बड़े ज़बरदस्त** (कुदरत वाले और) **हिकमत वाले हैं** (कि अपनी क़ुदरत व हिकमत से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को बचा लिया और उठा लिया और यहूदियों को शुबह की वजह से पता भी न चला)(158) **और** (यहूदियों को बहुत जल्दी दुनिया में ही असलीयत का पता चल जाएगा) **कोई आदमी किताब वालों में** (यानी यहूदियों में) **से ऐसा नहीं जो ईसा** (अ़लैहिस्सलाम के नबी होने) **की अपने मरने से** (ज़रा) **पहले** (जब कि दूसरी दुनिया दिखाई देने लगती है) **सच्चाई न जान लेगा** (भले ही उस वक़्त जान लेने से कोई फ़ाइदा नहीं हां अगर अब ईमान ले आएं तो नफ़ा हो जाए), **और क़ियामत के दिन वो** (यानी ईसा अलैहिस्सलाम) **उन** (इनकार करने वालों) **पर गवाही देंगे**(159)।

नोटः- एक हदीस में है कि ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम एक इन्साफ़ करने वाला बादशाह बन कर (क़ियामत के नज़दीक ज़माने में) ज़रूर उतरेंगे वो दज्जाल और ख़िन्ज़ीर को क़त्ल करे देंगे सलीब को तोड़ डालेंगे और उस वक़्त इबादत सिर्फ़ अल्लाह की होगी। (तिबरानी)

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَ بِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ﴿١٦٠﴾ وَّ اَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَ قَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَ اَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ؕ وَ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٦١﴾ لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَ مَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَ الْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَ الْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٦٢﴾

आयत न० 160 से 162

सो यहूदियों के इन ही बड़े-बड़े गुनाहों की वजह से (सज़ा में) **हम ने बहुत सी पाक** (यानी हलाल व मज़ेदार और फ़ाइदे की) **चीज़ें जो** (पहले से) **उन के लिए** (भी) **हलाल थी उन पर हराम कर दीं और इस वजह से कि** (वो आगे भी ऐसी हरकतों से न रूके जैसे यह कि) **वो** (हुक्मों को बदल कर या अल्लाह के हुक्मों को छुपा कर) **बहुत लोगों को अल्लाह तआला की राह**

(यानी सच्चे दीन को मानने) **से रोकते थे(160) और इस वजह से कि वो सूद लिया करते थे हालांकि** (तौरेत में) **उन को इससे मना कर दिया गया था और इस वजह से कि वो लोगों के माल नाहक़ तरीक़े** (यानी शरीअ़त से नाजाइज़ तरीक़े) **से खा जाते थे, और** (आख़रत में) **हम ने उन लोगों के लिए जो उनमें से काफ़िर हैं दर्दनाक सज़ा तैयार कर रक्खी है** (मगर जो शरीअ़त के तरीक़े पर ईमान ले आए उस की पिछली ग़लतियां सब मुआफ़ हो जाएंगी)(161) **लेकिन इन** (यहूदियों) **में जो लोग** (दीन के) **इल्म में माहिर** (और उस पर अ़मल करने में मज़बूत) **हैं और जो** (उन में) **ईमान ले आने वाले हैं कि इस किताब पर भी ईमान लाते हैं जो आप के पास भेजी गई और उस किताब पर भी** (ईमान रखते हैं) **जो आप से पहले** (नबियों के पास) **भेजी गई** (जैसे तौरेत व इन्जील) **और जो** (उन में) **नमाज़ की पाबन्दी करने वाले हैं और जो** (उन में) **ज़कात देने वाले हैं और जो** (उन में) **अल्लाह तआ़ला पर और क़ियामत के दिन पर यक़ीन रखने वाले हैं,** (सो) **ऐसे लोगों को हम ज़रूर** (आख़रत में) **बड़ा सवाब देंगे**(162)।

إِنَّآ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ كَمَآ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰ نُوحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنۢ بَعْدِهٖ ۚ وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰٓ إِبْرٰهِيمَ وَإِسْمٰعِيلَ وَإِسْحٰقَ وَ
يَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَعِيسٰى وَأَيُّوبَ وَيُونُسَ وَهٰرُونَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ وَءَاتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُورًا ﴿١٦٣﴾ وَرُسُلًا قَدْ
قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ۚ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوسٰى تَكْلِيمًا ﴿١٦٤﴾ رُسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَ
مُنْذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٦٥﴾ لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ
أَنْزَلَ إِلَيْكَ أَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُونَ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيدًا ﴿١٦٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ
سَبِيلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوا ضَلٰلًا بَعِيدًا ﴿١٦٧﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ
طَرِيقًا ﴿١٦٨﴾ إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ۚ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيرًا ﴿١٦٩﴾

आयत न० 163 से 169

हमने (कुछ आप को अनोखा पैग़म्बर नहीं बनाया जो ऐसी उल्टी सीधी मांग करते हैं बल्कि) **आप के पास** (भी ऐसे ही) **वही भेजी है जैसे** (हज़रत) **नूह** (अलैहिस्सलाम) **के पास भेजी थी और उन के बाद और पैग़म्बरों के पास** (भेजी थी), **और** (उनमें से कुछ के नाम भी बताते हैं कि) **हमने** (हज़रत) **इबराहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याक़ूब और याक़ूब की औलाद** (में जो नबी हुए हैं) **और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलेमान**

(अलैहिमुस्सलाम) **के पास वही भेजी थी, और** (इसी तरह) **हमने दाऊद** (अलैहिस्सलाम के पास वही भेजी थी और उन) **को** (किताब) **ज़बूर दी थी(163) और** (इन के सिवा) **कुछ** (ऐसे) **पैग़म्बरों** (को भी वही भेजी जिन) **का हाल इसके पहले** (की सूरतों में) **हम आप से बयान कर चुके हैं और कुछ** (ऐसे) **पैग़म्बरों** (को वही भेजी जिन) **का हाल** (अभी तक) **हमने आप से बयान नहीं किया, और** (हज़रत) **मूसा** (अलैहिस्सलाम को भी वही भेजी और उन) **से अल्लाह तआ़ला ने ख़ास-ख़ास तरीक़े पर बात की(164)** (और) **उन सब को** (ईमान पर मुआफ़ी की) **ख़ुशख़बरी देने वाले और** (कुफ़्र पर सज़ा का) **डर सुनाने वाले पैग़म्बर बना कर इसलिए भेजा ताकि लोगों के पास अल्लाह तआ़ला के सामने उन पैग़म्बरों के** (आने के) **बाद कोई मजबूरी** (बताने की गुन्जाइश) **बाक़ी न रहे, और** (यूं) **अल्लाह तआ़ला पूरे ज़ोर** (और कुदरत) **वाले हैं** (कि बिना पैग़म्बर भेजे भी सज़ा दे सकते थे लेकिन) **बड़े हिकमत वाले** (भी) **हैं** (इसलिए मजबूरी बताने की गुन्जाइश नहीं छोड़ी)**(165) अल्लाह तआ़ला इस किताब के वास्ते से जिस को अपने इल्मी कमाल के साथ आप के पास भेजा है** (जिससे वो आप के नबी होने का सबूत बन गई उस के वास्ते से) **गवाही दे रहे हैं, और फ़रिशते** (आप के नबी होने की) **गवाही दे रहे हैं, और** (असल बात तो वो ही है कि) **अल्लाह तआ़ला ही की गवाही काफ़ी है** (किसी के मानने या गवाही देने की ज़रूरत नहीं)**(166) बेशक जो लोग** (इन सबूतों के बाद भी) **इनकार करते हैं और** (दूसरों को भी) **अल्लाह के दीन से रोकते हैं वो** (सच्चाई से) **बड़ी दूर की गुमराही में जा पड़े हैं(167) बेशक जो लोग** (सच्चाई का) **इनकार करते हैं और** (रूकावट बन कर) **दूसरों का भी नुक़सान कर रहे हैं अल्लाह तआ़ला उन को कभी न बख़्शेंगे और न उन को कोई राह** (यानी जन्नत की राह) **दिखाएंगे(168) सिवाए जहन्नम की राह के** (और वो) **उस** (जहन्नम) **में सदा-सदा रहेंगे, और यह बात** (यानी ऐसी सज़ा देना) **अल्लाह के लिए बहुत आसान है** (यानी कुछ सामान नहीं करना पड़ता)**(169)।**

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ وَ اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۷۰﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَ لَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ اِنَّمَا
الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَ كَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰهَآ اِلٰى مَرْيَمَ وَ رُوْحٌ مِّنْهُ ٝ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ ۚ وَ
لَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗٓ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي
الْاَرْضِ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۱۷۱﴾ ع

आयत न० 170 से 171

ऐ (सारी दुनिया के) **लोगो तुम्हारे पास यह रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **सच्चा दीन लेकर तुम्हारे रब की तरफ़ से आए हैं तो** (तुम्हें चाहिए कि) **तुम** (इन पर और जो ये बताएं सब पर) **यक़ीन रक्खो यह तुम्हारे लिए अच्छा होगा** (क्योंकि बख़शिश होगी), **और अगर तुम इनकार करोगे तो** (तुम्हारा ही नुक़सान है अल्लाह तआ़ला का कोई नुक़सान नहीं क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला** (तो) **मालिक हैं उस के जो कुछ** (भी) **आसमानों में और ज़मीन में** (मौजूद) **है, और अल्लाह तआ़ला** (सब के ईमान व कुफ़्र की) **पूरी ख़बर रखते हैं** (और दुनिया में जो पूरी सज़ा नहीं देते तो इसलिए कि) **पूरी हिक्मत वाले** (भी) **हैं (170)** (और) **ऐ किताब वालो** (यानी इन्जील वालो) **तुम अपने दीन** (के बारे) **में** (सही अक़ीदे की) **हद से मत निकलो और अल्लाह तआ़ला की शान में ग़लत बात मत कहो** (कि नऊज़ुबिल्लाह वो औलाद वाला है), **मसीह ईसा बिन मरयम तो और कुछ नहीं सिर्फ़ अल्लाह के पैग़म्बर हैं और अल्लाह तआ़ला के एक** (पैदाइश का) **कलमा हैं जिस को अल्लाह तआ़ला ने** (हज़रत) **मरयम तक** (हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के वास्ते से) **पहुंचाया था और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से एक जान** (दार चीज़ हैं कि उस जान को हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम के पेट में हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम की फूंक के वास्ते से पहुंचा दिया था बाक़ी न वो अल्लाह के बेटे हैं न तीन में के एक) **हैं, तो** (जब ये सब बातें ग़लत हैं तो सब से तौबा करो) **अल्लाह पर और उस के सब पैग़म्बरों पर** (उन के सिखाए हुए तरीक़े पर) **ईमान लाओ** (तौहीद का अक़ीदा रक्खो) **और यह मत कहो कि** (ख़ुदा) **तीन हैं, इस** (शिर्क की) **बात को छोड़ दो इसी में तुम्हारी भलाई है,** (क्योंकि) **सच्चा माबूद तो** (बस) **एक अल्लाह** (ही) **है,** (और) **वो औलाद होने से पाक है, जो कुछ आसमानों में और ज़मीन में** (मौजूद) **है वो सब का मालिक है, और अल्लाह तआ़ला सब कामों के बनाने में काफ़ी** (हैं और उन के सिवा सब नाक़ाफ़ी और मुहताज हैं कि एक हद पर जाकर मजबूर हो जाते) **हैं(171)**

नोटः- हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी तारीफ़ में ऐसे हद से न बढ़ो जैसे ईसाइयों ने ईसा बिन मरयम के बारे में किया है ख़ूब समझ लो कि मैं अल्लाह का बन्दा हूं इस लिए तुम मुझे अल्लाह का बन्दा और रसूल कहा करो।

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ
فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿۱۷۲﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَ
اَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا وَاسْتَكْبَرُوْا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا
نَصِيْرًا ﴿۱۷۳﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا ﴿۱۷۴﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ
وَاعْتَصَمُوْا بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۙ وَّيَهْدِيْهِمْ اِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿۱۷۵﴾

आयत न० 172 से 175

(ईसाई बेबात हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को ख़ुदा या ख़ुदा का हिस्सा बना रहे हैं ख़ुद हज़रत) **मसीह** (से कोई पूछ कर देखे तो) **कभी भी अल्लाह का बन्दा बनने से शर्म** (और इनकार) **नही करेंगे और न नज़दीकी फ़रिशते** (कभी शर्म करेंगे), **और** (वो शर्म कैसे करेंगे क्योंकि) **जो आदमी अल्लाह तआ़ला का बन्दा बनने से शर्म करेगा और घमन्ड करेगा तो** (उस का अन्जाम सुन लो) **अल्लाह तआ़ला ज़रूर सब लोगों को अपने पास** (यानी हिसाब के मौक़े पर) **जमा करेंगे**(172) **फिर जो लोग** (दुनिया में) **ईमान लाए होंगे और उन्होंने अच्छे काम किये होंगे तो उन को उन का पूरा सवाब** (भी) **देंगे और** (इसके सिवा) **उन को अपनी महरबानी से और ज़्यादा** (भी) **देंगे, और जिन लोगों ने** (बन्दा बनने से) **शर्म की होगी और घमन्ड किया होगा तो उन को सख़्त दर्दनाक सज़ा देंगे और वो लोग अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को अपना यार और मददगार नहीं पाएंगे**(173) **ऐ** (सारी दुनिया के) **लोगों बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक** (काफ़ी) **दलील आ चुकी है** (वो मुबारक हस्ती है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की) **और हम ने तुम्हारे पास एक साफ़ नूर भेजा** (है वो कुरआन मजीद है बस रसूल और कुरआन के वास्ते से जो तुम को बताया जाए वो हक़) **है**(174) **सो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उन्होंने अल्लाह** (के दीन) **को** (यानी इस्लाम को) **मज़बूत पकड़ा** (जिस के लिए पैग़म्बर और कुरआन को सच्चा मानना ज़रूरी है) **तो ऐसों को अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत में** (यानी जन्नत में) **दाख़िल करेंगे और अपनी महरबानी में** (ले लेंगे यानी जन्नत में दाख़िल करने के साथ और बड़ी नेमतें देंगे जिन में अल्लाह का दीदार भी दाख़िल है) **और अपने** (पास) **तक** (पहुंचने) **का उन को सीधा रास्ता बता देंगे**(175)।

يَسْتَفْتُوْنَكَ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِى الْكَلٰلَةِ ؕ اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ لَيْسَ لَهٗ وَلَدٌ وَّ لَهٗۤ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَ
هُوَ يَرِثُهَاۤ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ؕ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ ؕ وَ اِنْ كَانُوْۤا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّ نِسَآءً
فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ تَضِلُّوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۷۶﴾

आयत न० 176

नोटः- सूरत के शुरू में कुछ मीरास के हुक्म बयान हुए थे अब अख़ीर में फिर मीरास के हुक्म का बयान हैः-

(ऐ पैग़म्बर) **लोग आप से** (कलाला की मीरास के बारे में हुक्म) **पूछते हैं, आप** (जवाब में) **कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला तुम को कलाला** (यानी जिस के न कोई औलाद हो और न मां बाप हों उस की मीरास) **के बारे में हुक्म देते हैं,** (वो यह है कि) **अगर कोई आदमी मर जाए जिस की औलाद न हो** (यानी न बेटा न बेटी, और न मां बाप हों) **और उसके एक बहन हो** (जो मां बाप दोनों से हो या बाप से हो) **तो उस** (बहन) **को उस के कुल छोड़े माल का आधा** (मिलेगा बाक़ी दूसरे नज़दीकी रिशतेदारों को और अगर वो न हों तो फिर सब उसी बहन को) **मिलेगा, और वो आदमी उस** (अपनी बहन) **का वारिस** (कुल छोड़े माल का) **होगा अगर** (वो बहन मर जाए और) **उस के औलाद न हो** (और मां बाप भी न हों), **और अगर** (ऐसी) **बहनें दो** (या ज़्यादा) **हों तो उन को उस के कुल छोड़े माल में से दो तिहाई मिलेंगे** (और एक तिहाई दूसरे नज़दीकी रिशतेदारों को और अगर वो न हों तो सब उन बहनों को मिल जाएगा), **और अगर** (ऐसे मरने वाले के जिस के न औलाद है न मां बाप चाहे मरने वाला मर्द हो या औरत) **वारिस कुछ** (यानी एक से ज़्यादा ऐसे ही) **भाई बहन हों मर्द और औ़रत तो** (माल इस तरह बान्टा जाएगा कि) **एक मर्द को दो औ़रतों के हिस्से के बराबर** (यानी भाई को बहन से दूना हिस्सा) **मिलेगा, अल्लाह तआ़ला तुम से** (दीन की बातें) **इसलिए बयान करते हैं कि तुम** (जानकारी न होने से) **गुमराही में न पड़ो, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को अच्छी तरह जानते हैं**(176)।

नोटः- यहां यह बात भी मालूम हो गई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी तरफ़ से कोई हुक्म न करते थे अगर किसी बारे में वही का हुक्म मौजूद न होता तो वही के आने का इन्तिज़ार करते थे जब वही आजाती तब हुक्म करते थे।

5-सूरत-अलमाइदा

इस मदनी सूरत में '16' रूकू और '120' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ؕ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَ
اَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ۝1 يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَ لَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَ لَا
الْهَدْيَ وَ لَا الْقَلَآئِدَ وَ لَآ آٰمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ رِضْوَانًا ؕ وَ اِذَا حَلَلْتُمْ
فَاصْطَادُوْا ؕ وَ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَ تَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَ
التَّقْوٰى ۪ وَ لَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِ ۪ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝2

आयत न० 01 से 02

ऐ ईमान वालो अपने एहदों को (यानी ईमान के बारे में जो वादे तुम ने अल्लाह तआ़ला से किये हैं उन को) **पूरा** (करो यानी शरीअ़त के सब हुक्मों को अदा) **करो, तुम्हारे लिए सभी चौपाए** (जानवर) **जो** (इन) **पालतू जानवरों** (यानी ऊंट, बैल, बकरी) **के जैसे हों हलाल किये गये हैं** (जिन के बारे में इससे पहले भी बयान हो चुका जैसे हिरन, नीलगाय और इन जैसे) **मगर जो आगे बताए जाते हैं** (कि वो हलाल नहीं) **लेकिन** (उनमें) **जो शिकार हैं उन को हलाल मत समझना जिस हालत में कि तुम अहराम** (या हरम) **में हो** (जैसे हज या उमरे के दिनों में), **बेशक अल्लाह तआ़ला** (मालिक हैं) **जो चाहे हुक्म करें(01) ऐ ईमान वालो बेहुरमती** (यानी बेअदबी) **न करो अल्लाह तआ़ला** (के दीन) **की निशानियों की** (यानी जिन चीज़ों के अदब का हुक्म दिया गया है उस में अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ न करो) **और न हुरमत वाले महीने की** (बेअदबी करो कि उसमें काफ़िरों से लड़ने लगो) **और न हरम में कुरबानी होने वाले जानवर की** (बेअदबी करो) **और न उन जानवरों की** (बेअदबी करो) **जिन के गले में** (इस निशानी के लिए) **पट्टे पड़े हुए हों** (कि ये अल्लाह के नाम पर हरम में कुरबान होंगे) **और न उन लोगों की** (बेअदबी करो) **जो कि बैतुल हराम** (यानी ख़ाना काबा के हज या उमरा) **के इरादे से जा रहे हों** (और) **अपने रब की**

महरबानी और ख़ुशी के चाहने वाले हों (यानी इन चीज़ों के अदब की वजह से काफ़िरों से भी मत उलझो), **और जिस वक़्त तुम अहराम से बाहर आजाओ तो** (इजाज़त है कि) **शिकार किया करो** (लेकिन वो शिकार हरम में न हो), **और** (ऊपर जिन से उलझने से तुम को मना किया गया है उस में) **ऐसा न हो कि तुम किसी क़ौम से जो इस वजह से दुशमनी रखते हो कि उन्होंने** (तुम को इससे पहले हुदैबिया के साल में) **ख़ाना काबा** (में जाने) **से रोक दिया था** (यानी क़ुरैशी काफ़िर) **वो** (दुशमनी) **तुम्हें इस बात पर न उभारे कि तुम** (शरीअत की) **हद से निकल जाओ** (यानी इन हुक्मों के ख़िलाफ़ कर बैठो ऐसा न करना), **और नेकी और परहेज़गारी** (की बातों) **में एक दूसरे की मदद करते रहो, और गुनाह और ज़ुल्म** (की बातों) **में एक दूसरे की मदद मत करो, और अल्लाह तआ़ाला से डरो** (कि इससे सब हुक्मों की पाबन्दी आसान हो जाती है), **बेशक अल्लाह तआ़ाला** (कहना न मानने वालों को) **सख़्त सज़ा देने वाले हैं**(02)।

नोटः- एक हदीस में है कि जो आदमी किसी ज़ालिम के साथ उस की मदद करने के लिए चला वो इस्लाम से निकल गया। और एक हदीस में है कि क़ियामत के दिन आवाज़ दी जाएगी कि कहां है ज़ालिम लोग और उन के मददगार सब को एक लोहे के सन्दूक़ में जमा करके जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। (रूहुल मुआ़नी)

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ
وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ ۟ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ؕ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ؕ
اَلْيَوْمَ يَئِسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ؕ اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ
عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ؕ فَمَنِ اضْطُرَّ فِيْ مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ﴿۳﴾

आयत न० 03

तुम पर (ये जानवर) **हराम किये गये हैं** (यानी) **मुरदार** (जानवर जो कि हलाल होने के बावजूद बिना ज़बह किये वैसे ही मर जाए) **और ख़ून** (जो बहता हो) **और सुअर का गोश्त** (इसी तरह उसके सब हिस्से) **और जो जानवर अल्लाह के सिवा दूसरे** (को ख़ुश करने) **के लिए नामज़द किया गया हो और** (हलाल जानवरों में से) **जो** (जानवर) **गला घुटने से मर जाए और**

जो किसी चोट से मर जाए और जो ऊंचे से गिर कर मर जाए (जैसे पहाड़ से या कुंए में) **और जो किसी की टक्कर** (लगने) **से मर जाए और जिस को कोई दरिन्दा** (जानवर पकड़ कर) **खाने लगे** (और इससे मर गया हो ये सब भी हराम हैं) **लेकिन** (हलाल जानवरों की इन पांचों क़िस्मों से) **जिस को तुम** (उस के मरने से पहले शरीअ़त के तरीक़े से) **ज़बह कर लो** (वो हराम नहीं)**, और जो जानवर** (अल्लाह के सिवा दूसरों की) **इबादत गाहों पर ज़बह किया जाए** (हराम है चाहे ज़बान से दूसरे का नाम न ले मगर मदार इस का नीयत पर है) **और यह** (भी हराम है) **कि** (गोश्त) **जूए के तीरों से बान्टो, ये सब बातें गुनाह** (और हराम) **हैं, आज के दिन** (यानी अब) **नाउम्मीद हो गये काफ़िर लोग तुम्हारे दीन** (के दबने या गुम हो जाने) **से** (क्योंकि माशाअल्लाह इस्लाम अच्छी तरह फैल गया) **सो इन** (काफ़िरों) **से मत डरना** (कि तुम्हारे दीन को गुम कर सकें) **और मुझ से डरते रहना** (यानी मेरे हुक्मों की मुख़ालफ़त मत करना)**, आज के दिन तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को मैंने** (हर तरह) **पूरा कर दिया** (ताक़त में भी जिससे काफ़िर ना उम्मीद हुए और हुक्मों व क़ानूनों में भी) **और** (इस तरह से) **मैंने तुम पर अपनी नेमतें पूरी कर दीं और मैंने इस्लाम को तुम्हारा दीन बनने के लिए** (सदा को) **पसन्द कर लिया** (यानी क़ियामत तक तुम्हारा ये ही दीन रहेगा इस को बदल कर दूसरा दीन न लाया जाएगा बस तुम को चाहिए कि मेरी नेमत का शुक्र करके इस दीन पर पूरे-पूरे जमे रहो)**, फिर** (हराम चीज़ों को जानने के बाद यह भी जान लो कि) **जो आदमी सख़्त भूक से मजबूर हो जाए** (और इस मजबूरी में इन ऊपर वाली चीज़ों को खाले) **शर्त यह है कि किसी गुनाह की तरफ़ उस का झुकाव न हो** (यानी न ज़रूरत से ज़्यादा खाए और न मज़ा चाहता हो) **तो बेशक अल्लाह तआ़ला मुआफ़ करने वाले हैं** (अगर ज़रूरत का सही अन्दाज़ा न हुआ और ज़्यादा भी खा लिया और) **रहमत वाले हैं** (कि ऐसी हालत में इजाज़त देदी)(03)।

नोटः- एक बार यहूदियों के कुछ आ़लिम हज़रत उमर रज़ि० के पास आए और कहा कि तुम्हारे कुरआन में एक आयत ऐसी है कि अगर यहूदियों पर उतरती तो उस दिन को ईद का दिन मनाते जिस दिन वो उतरती आप ने पूछा वो कौन सी आयत है तो उन्होंने ये ही आयत पढ़ी ''अलयौमा......... यानी आज के दिन तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को मैंने पूरा कर दिया.........। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा कि हम को पता है वो आयत किस दिन उतरी थी क्योंकि वो हज के मौक़े पर जुमा के दिन उतरी जो कि मुसलमानों के लिए ख़ुद ही ईद का दिन है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ ؕ قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۙ وَ مَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا
عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ۫ فَكُلُوْا مِمَّآ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝٤

आयत न० 04

लोग आप से पूछते हैं कि (कुत्ते और बाज़ के शिकार किये हुए जानवरों में से) **क्या-क्या जानवर उन के लिए हलाल किये गये** (हैं यानी जितने हलाल शिकार ज़बह से हलाल हो जाते हैं क्या कुत्ते और बाज़ के शिकार करने से वो सब हलाल रहते) **हैं, आप** (जवाब में) **कह दीजिए कि तुम्हारे लिए सभी हलाल जानवर** (जो शिकार में पहले से हलाल हैं वो सब कुत्ते और बाज़ के ज़रिये शिकार करने से भी) **हलाल रक्खे गये हैं** (मगर इसके लिए कुछ शर्तें हैं वो यह कि) **जिन शिकारी जानवरों** (जैसे कुत्ता व बाज़) **को तुम सिखा दो** (यह एक शर्त है) **और तुम उन को** (शिकार पर) **छोड़ो भी** (यह दूसरी शर्त है) **और उन को इस तरह सिखाओ जो तुम को अल्लाह ने** (शरीअ़त में) **सिखाया है** (वो तरीक़ा यह है कि कुत्ते को यह सिखाया जाए कि शिकार को पकड़ कर खाए नही और बाज़ को यह सिखाया जाए कि जब उस को बुलाओ फ़ौरन वापस आजाए चाहे शिकार के पीछे जा रहा हो) **तो ऐसे शिकारी जानवर जिस शिकार को तुम्हारे लिए पकड़ें उस को खालो** (यह तीसरी शर्त है, तो अगर कुत्ता उस शिकार को खाने लगे या बाज़ बुलाने से वापस न आए तो समझा जाएगा ये शिकारी जानवर उस के कहने में नहीं तो उन्होंने शिकार भी उस के लिए नहीं पकड़ा बल्कि ख़ुद अपने लिए पकड़ा है) **और** (जब शिकार पर उस शिकारी जानवर को छोड़ने लगो तो) **उस** (जानवर) **पर** (यानी उसके छोड़ने के वक़्त) **अल्लाह का नाम भी लिया करो** (यानी बिस्मिल्लाह पढ़ कर छोड़ो यह चौथी शर्त है)**, और** (सभी बातों में) **अल्लाह से डरते रहा करो** (जैसे शिकार में ऐसे मत लग जाओ कि नमाज़ भी याद न रहे या इतनी हिर्स मत करो कि हलाल की शर्तें पूरी हुए बिना भी उस जानवर को खा जाओ)**, बेशक अल्लाह तआ़ला जल्दी हिसाब लेने वाले हैं**(04)

नोटः- जब ये बताई शर्तें पूरी हों तो अगर जानवर तुम्हारे पास आने तक दम तोड़ चुका हो तो भी हलाल है लेकिन उस में पांचवी शर्त यह भी है कि शिकारी जानवर ने शिकार को ज़ख़्मी भी कर दिया हो वर्ना बिना शरई तरीक़े से ज़बह किये तुम्हारे लिए हलाल न होगा।

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ؕ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ۪ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۫ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ
الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ

مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ اَخْدَانٍ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۫ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝٥

आयत न० 05

आज तुम्हारे लिए (सारी) **हलाल चीज़ें** (सदा के लिए) **हलाल रक्खी गईं** (कि अब कभी बदली न जाएंगी)**, और जिन लोगों को** (तुम से पहले आसमानी) **किताब दी गई** (यहूदी व ईसाई) **उन का ज़बह किया हुआ** (भी) **तुम्हारे लिए हलाल है और** (यह ऐसा ही है जैसा कि) **तुम्हारा ज़बह किया हुआ उन को हलाल है, और पारसा औरतें भी जो मुसलमान हों** (तुम को हलाल हैं) **और** (इसी तरह) **पारसा औरतें उन लोगों में से भी जिन को तुम से पहले** (आसमानी) **किताब दी गई है** (तुम्हारे लिए हलाल हैं) **जब तुम उन को उन का महर देदो,** (और) **इस तरह से कि तुम** (उन को) **बीवी बनाओ** (यानी निकाह में लाओ जिस की शर्तें शरीअ़त में मालूम हैं) **न तो खुली बदकारी करो और न छुपी यारी करो** (ये सब हुक्म शरीअत के हैं जिन पर ईमान लाना फ़र्ज़ है)**, और जो आदमी ईमान** (लाने की चीज़ों) **के साथ कुफ़्र करेगा** (जैसे हलाल के हलाल होने या हराम के हराम होने का इनकार करेगा) **तो उस आदमी का** (हर नेक) **काम बेकार** (और बर्बाद) **हो जाएगा, और वो आदमी आख़िरत में नुक़सान उठाने वालों में होगा** (बस हलाल को हलाल समझो और हराम को हराम समझो)**(05)**

नोटः- मगर आज कल ईसाई लोग ज़बह नहीं करते बल्कि चोट मार कर मार देते हैं और न ही उस पर अल्लाह का नाम लेते हैं इसलिए उन का ज़बह किया हुआ हलाल नहीं। दूसरे जो लोग यहूदी या ईसाई कहलाते हैं बस नाम को, न तौरेत व इन्जील पर उन का यक़ीन है न हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम व हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान है वो अक़ीदे से लामज़हब और नास्तिक हैं, साफ़ बात है कि इन लोगों की औरतें मुसलमान के लिए किसी तरह हलाल नहीं लिहाज़ा इससे बचें।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَ اَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَ امْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَ
اَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ وَ اِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ؕ وَ اِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ
الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَ اَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ؕ مَا
يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّ لٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَ لِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٦ وَ
اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ مِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖٓ ۙ اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا ۫ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

आयत न० 06 से 07

ऐ ईमान वालो जब तुम नमाज़ को उठने लगो (यानी नमाज़ पढ़ने का इरादा करो और उस वक़्त वुज़ू न हो) **तो** (वुज़ू कर लो यानी) **अपने चेहरों को धोलो और अपने हाथों को कोहनियों समीत** (धोलो) **और अपने सरों पर** (भीगा) **हाथ फेरलो** (जिसे मसह कहते हैं) **और अपने पैरों को भी टख़्नों समीत** (धोलो), **और अगर तुम नापाकी की हालत में हो तो** (नमाज़ से पहले) **सारा बदन पाक** (कर लो यानी गुस्ल) **कर लो, और अगर तुम बीमार हो** (और पानी का बरतना नुक़सान देता हो) **या सफ़र में हो** (और पानी नहीं मिलता, यह मजबूरी हुई) **या** (वैसे ही वुज़ू टूट जाए जैसे) **तुम में से कोई आदमी** (पेशाब या पाख़ाने के) **इस्तन्जे से** (होकर) **आया हो** (जिससे वुज़ू टूट गया हो) **या तुमने बीवियों से जिस्मानी मिलाप किया हो** (जिससे गुस्ल टुट गया हो) **फिर** (इन सारी सूरतों में) **तुम को पानी** (के बरतने का मौक़ा) **न मिले** (चाहे नुक़सान की वजह से या पानी न मिलने की वजह से) **तो** (इन सब हालतों में) **तुम पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लिया करो यानी अपने चेहरों और हाथों का उस** (मिट्टी) **से मसह कर लो, अल्लाह तआ़ला** (इन हुक्मों को बयान करके) **यह नहीं चाहते कि तुम पर कोई तंगी डालें** (यानी यह चाहते हैं कि तुम पर कोई तंगी न रहे) **लेकिन अल्लाह तआ़ला यह चाहते हैं कि तुम को पाक साफ़ रक्खें और यह** (चाहते हैं) **कि तुम पर अपनी नेमतें पूरी कर दें ताकि तुम** (इस महरबानी का) **शुक्र अदा करो** (और शुक्र में कहना मानना भी दाख़िल है)(06) **और तुम लोग अल्लाह तआ़ला के इनआम को जो तुम पर हुआ है याद करो** (जिसमें बड़ा इनआम यह है कि तुम्हारी भलाई के तरीक़े तुम्हारे लिए शरीअ़त में रक्खे) **और उसके इस वादे को भी याद करो जो वादा उस ने तुम से लिया था जबकि तुम ने कहा था कि हम ने** (इन हुक्मों को) **सुना और मान लिया** (क्योंकि इस्लाम लाने के वक़्त हर आदमी इस बात का वादा करता है), **और अल्लाह तआ़ला** (की नाराज़ी) **से डरो, बेशक अल्लाह तआ़ला दिलों की बात की पूरी ख़बर रखते हैं**(07)।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۡ وَ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ
اِعْدِلُوْا ۟ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۡ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝

आयत न० 08 से 10

ऐ ईमान वालो अल्लाह तआ़ला (को ख़ुश करने) **के लिए** (हुक्मों की) **पूरी पाबन्दी करने वाले** (और गवाही की ज़रूरत हो तो) **इन्साफ़ की गवाही देने वाले रहो, और किसी ख़ास क़ौम की दुशमनी की वजह से ऐसा न हो कि तुम** (उन के बारे में) **इन्साफ़ न करो,** (ज़रूर हर बात में) **इन्साफ़ किया करो यह बात** (यानी इन्साफ़ करना) **तक़्वे से ज़्यादा नज़दीक** (है यानी इससे तक़्वे वाला कहलाता) **है, और अल्लाह तआ़ला** (की नाराज़ी) **से डरो** (ये ही असलीयत है तक़्वे की), **बेशक अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है(08) अल्लाह तआ़ला ने ऐसे लोगों से जो ईमान लाए और** (उन्होंने) **अच्छे काम किये वादा किया है कि उन के लिए बख़्शिश और बड़ा सवाब है(09) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारे हुक्मों को झूटा बताया ऐसे लोग दोज़ख़ में रहने वाले हैं(10)।**

नोटः- गवाही सिर्फ़ किसी मुक़द्दमे में दिये जाने वाले बयान का नाम नहीं बल्कि हर वो बात जहां बयान की सनद हो गवाही में दाख़िल है जैसे इम्तिहान में दिये जाने वाले नम्बर और किसी पेशे के लिए दिये जाने वाले सर्टिफ़िकेट और नौकरी के ओहदों के लिए चुना जाना ये सब क़ाबिल होने की गवाही है। ऐसे ही डाक्टरों के दिये हुए मेडिकल सर्टीफिकेट बीमारी के लिए गवाही है। और इलैक्शन में दिये जाने वाले वोट उस केन्डीडेट के हक़दार होने की गवाही है और हर तरह की गवाही में इन्साफ़ पर क़ाइम रहने का हुक्म है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اذۡكُرُوۡا نِعۡمَتَ اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ اِذۡ هَمَّ قَوۡمٌ اَنۡ يَّبۡسُطُوۡۤا اِلَيۡكُمۡ اَيۡدِيَهُمۡ فَكَفَّ اَيۡدِيَهُمۡ
عَنۡكُمۡ ۚ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلۡيَتَوَكَّلِ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ⑪ وَ لَقَدۡ اَخَذَ اللّٰهُ مِيۡثَاقَ بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ ۚ وَ بَعَثۡنَا
مِنۡهُمُ اثۡنَىۡ عَشَرَ نَقِيۡبًا ؕ وَ قَالَ اللّٰهُ اِنِّىۡ مَعَكُمۡ ؕ لَئِنۡ اَقَمۡتُمُ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَيۡتُمُ الزَّكٰوةَ وَ اٰمَنۡتُمۡ بِرُسُلِىۡ وَ
عَزَّرۡتُمُوۡهُمۡ وَ اَقۡرَضۡتُمُ اللّٰهَ قَرۡضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنۡكُمۡ سَيِّاٰتِكُمۡ وَ لَاُدۡخِلَنَّكُمۡ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا
الۡاَنۡهٰرُ ۚ فَمَنۡ كَفَرَ بَعۡدَ ذٰلِكَ مِنۡكُمۡ فَقَدۡ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيۡلِ ⑫

आयत न० 11 से 12

ऐ ईमान वालो अल्लाह तआ़ला के (उस) **इनआम को याद करो जो तुम पर हुआ है जब कि एक क़ौम के लोगों ने** (यानी क़ुरैशी काफ़िरों ने, जब कि इस्लाम के शुरू में मुसलमान

कमज़ोर थे) **यह इरादा किया कि तुम पर** (इस तरह) **हमला करें** (कि तुम्हारा ख़ातमा ही कर दें) **तो अल्लाह तआला ने उन का क़ाबू तुम पर** (इतना) **न चलने दिया** (और आख़ीर में तुम को हावी कर दिया बस इस नेमत को याद करो) **और** (हुक्मों की पाबन्दी में) **अल्लाह तआला से डरो** (कि यह इस नेमत का शुक्र अदा करना है), **और** (आगे भी) **ईमान वालो को अल्लाह तआला पर भरोसा रखना चाहिए** (जिसने पहले तुम्हारे सब काम बनाए हैं और आगे भी आख़रत तक उम्मीद रक्खो)(11) **और अल्लाह तआला ने** (हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वास्ते से) **बनी इस्राईल से** (भी) **एहद लिया था** (जिस का बयान आगे आता है) **और** (उन वादों की पाबन्दी के लिए) **हम ने उन में से** (उन के ख़ानदानों की गिनती के हिसाब से) **बारह सरदार बनाए** (कि हर ख़ानदान पर एक-एक सरदार रहे जो अपने लोगों को वादे की पाबन्दी की नसीहत करता रहे), **और अल्लाह तआला ने** (उन से) **यह** (भी) **कहा कि मैं तुम्हारे पास हूं** (तुम्हारे भले बुरे की सब मुझको ख़बर रहेगी), **अगर तुम नमाज़ की पाबन्दी रक्खोगे और ज़कात अदा करते रहोगे और मेरे सब पैग़म्बरों पर** (जो आगे भी नये-नये आते रहेंगे) **ईमान लाते रहोगे और** (दुशमनों के मुक़ाबिले में) **उन की मदद करते रहोगे और** (ज़कात के सिवा और भी ख़ैर-ख़ैरात करके) **अल्लाह तआला को अच्छी तरह** (यानी सच्चे मन से) **क़र्ज़ देते रहोगे तो मैं ज़रूर तुम्हारे गुनाह तुम से दूर कर दूंगा और ज़रूर तुम को** (जन्नत के) **ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूंगा जिन के** (महलों) **के नीचे नहरें बहती होंगी, और जो आदमी इस** (वादा लेने) **के बाद भी कुफ़्र करेगा तो वो बेशक सीधे रास्ते से भटक जाएगा**(12)।

नोटः- अल्लाह की राह में ख़र्च करने को अल्लाह को क़र्ज़ देना इसलिए कहा गया कि इस का बदला ज़रूर मिलेगा यह यक़ीन रखते हुए ख़र्च करें, जैसे क़र्ज़ का अदा करना समाज में भी और क़ानून से भी ज़रूरी समझा जाता है।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَ جَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَ نَسُوْا حَظًّا مِّمَّا
ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَ لَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَ اصْفَحْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ
الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳﴾ وَ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّا نَصٰرٰۤى اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۪ فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ
الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ وَ سَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿۱۴﴾

आयत न० 13 से 14

(लेकिन बनी इस्राईल ने उन वादों को तोड़ डाला जिससे तरह-तरह की सज़ाओं में पकड़े गये) **तो सिर्फ़ उन के एहद तोड़ने की वजह से हम ने उन को अपनी रहमत से दूर कर दिया** (और ये ही असलीयत है लानत की) **और हम ने उन के दिलों को सख़्त कर दिया** (कि सच्चाई का उन पर असर ही नहीं होता और इसी का असर है कि) **वो लोग** (यानी उन में के आलिम अल्लाह के) **कलाम** (यानी तौरेत की बातों) **को उस के मौक़ों से बदल देते हैं** (यानी उस के बोल या माइने बदल देते हैं) **और** (इस का असर यह हुआ कि) **वो लोग जो कुछ उन को** (तौरेत में) **नसीहत की गई थी उस में से अपना एक बड़ा हिस्सा** (नफ़े का जो कि उन को उस पर चलने से नसीब होता) **खो बैठे, और आप को आए दिन** (यानी सदा दीन के बारे में) **किसी न किसी** (नई) **धोकेबाज़ी का पता चलता रहता है जो वो करते रहते हैं सिवाए उन के गिनती के कुछ लोगों के** (जो कि मुसलमान हो गये थे) **तो आप उन को मुआफ़ कीजिए और दरगुज़र** (कीजिए यानी जब तक शरई ज़रूरत न हो उन की धोकेबाज़ी न खोलिए और न रूसवा) **कीजिए, बेशक अल्लाह तआला अहसान करने वालों से मुहब्बत करते हैं**(13) **और जो लोग कहते हैं कि हम ईसाई हैं हम ने उन से भी** (यहूदियों की तरह ही) **वादा लिया था तो वो भी जो कुछ उन को** (इन्जील में) **नसीहत की गई थी उसमें से अपना एक बड़ा हिस्सा** (नफ़े का जो उस पर चलने से नसीब होता) **खो बैठे, तो हम ने उन में आपस में क़ियामत तक के लिए दुशमनी व नफ़रत डाल दी** (यह तो दुनिया की सज़ा हुई)**, और जल्दी ही** (आख़रत में कि वो भी पास ही है) **उन को अल्लाह तआला उन का किया हुआ बता**(देंगे फिर सज़ा)**देंगे**(14)।

नोटः- यहां ईसाइयों में डाले जाने वाली फूट का जो बयान है वो उन के बारे में है जो असल में ईसाई हैं और ईसाई मज़हब के पाबन्द हैं और आज कल जो अपने आप को ईसाई कहते हैं वो ख़ुद अपने मज़हब को छोड़ कर दहरिये व नास्तिक बन गये हैं असल में वो ईसाई हैं ही नहीं तो जब मज़हब ही न रहा तो आपसी दुशमनी भी न रही क्योंकि वो दुशमनी मज़हबी थी इसलिए इन में मेल दिखाई देना आयत के ख़िलाफ़ नहीं।

يَاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَ يَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ۬ قَدْ
جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ۙ﴿۱۵﴾ يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ

الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ وَ يَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٦﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ
مَرْيَمَ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَ اُمَّهٗ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ؕ وَ
لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَيْنَهُمَا ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾ وَ قَالَتِ الْيَهُوْدُ وَ
النَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَ اَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ
يَّشَآءُ وَ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَيْنَهُمَا ۫ وَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٨﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ
جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّ لَا نَذِيْرٍ ۫ فَقَدْ جَآءَكُمْ
بَشِيْرٌ وَّ نَذِيْرٌ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٩﴾

आयत न० 15 से 19

ऐ किताब वालो (यानी यहूदी व ईसाई लोगों) **तुम्हारे पास हमारे यह पैग़म्बर** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आए हैं** (जिन के इल्म का तो यह हाल है कि) **किताब** (की बातों) **में से जिन चीज़ों को तुम छुपा लेते हो उन में से बहुत सी बातों को** (वही से जान कर) **तुम्हारे सामने साफ़-साफ़ खोल देते हैं और** (आदत शरीफ़ ऐसी है कि जिन चीज़ों को तुम ने छुपा लिया था उन में से) **बहुत सी बातों के** (जानने के बावजूद) **टाल जाते हैं** (कि जिनके खोलने से नफ़ा कुछ नहीं सिर्फ़ तुम्हारी रूसवाई ही होती है और ये ख़ूबियां पैग़म्बरी की निशानी) **हैं,** (और इसी पैग़म्बर के वास्ते से) **तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक रौशन चीज़ आई है और** (वो) **एक खुली किताब** (है)**(15) कि उस के वास्ते से अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों को जो उस की ख़ुशी के चाहने वाले हों सलामती की राहें बताते हैं** (यानी जन्नत में जाने के तरीक़े) **और उन को अपनी तौफ़ीक़ से** (कुफ़्र और गुनाह के) **अन्धेरे से निकाल कर** (ईमान व नेकी के) **नूर की तरफ़ ले आते हैं और उन को** (सदा) **सीधे रास्ते पर चलाते हैं(16) बेशक वो लोग काफ़िर हैं जो यह कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला मसीह बिन मरयम है, आप उन से यह पूछिए कि अगर ऐसा है तो बताओ कि अगर अल्लाह तआ़ला मसीह बिन मरयम को** (जिन को तुम हूबहू ख़ुदा समझते हो उन को) **और उन की मां** (हज़रत मरयम) **को और जितने ज़मीन में आबाद हैं उन सब को** (मौत से) **हलाक करना चाहें** (तो) **क्या कोई आदमी ऐसा है जो अल्लाह तआ़ला से ज़रा भी उन को बचा सके** (यानी इतनी बात तो तुम भी जानते हो कि उन को हलाक करना अल्लाह की क़ुदरत में है तो जिस को हलाक करना दूसरे के क़ब्ज़े में हो वो ख़ुदा कैसे हो सकता है), **और** (जो असल में ख़ुदा

और सब का माबूद है यानी) **अल्लाह तआ़ला** (उसकी यह शान है कि उस) **ही की है हुकूमत आसमानों पर और ज़मीन पर और जितनी चीज़ें इन दोनों के बीच में हैं उन पर, और वो जिस चीज़ को** (जिस तरह) **चाहें पैदा कर दें, और अल्लाह तआ़ला को हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत** (है तो हज़रत ईसा को बिना बाप के पैदा कर देना अल्लाह के लिए क्या मुश्किल) **है**(17) **और यहूदी व ईसाई** (दोनो गिरोह) **कहते हैं कि हम अल्लाह के बेटे और उस के प्यारे हैं, आप** (उन से) **पूछिए कि अच्छा फिर तुम को तुम्हारे गुनाहों की सज़ा में** (आख़िरत में) **क्यों अज़ाब देंगे** (जिस को तुम भी मानते हो क्या कोई बाप अपने बेटे या प्यारे को अज़ाब भी दिया करता है अगर कोई कहे कि कभी-कभी बाप भी औलाद की ग़लती पर सज़ा देता है तो जान लो आख़िरत का अज़ाब और चीज़ है)**, बल्कि तुम भी दूसरे लोगों की तरह आम आदमी हो, वो** (अल्लाह तआ़ला) **जिस को चाहेंगे मुआफ़ कर देंगे और जिस को चाहेंगे सज़ा देंगे, और अल्लाह ही की है सब हुकूमत आसमानों में भी और ज़मीन में भी और जो कुछ उन के बीच में है, और अल्लाह ही की तरफ़ सब को लौट कर जाना** (है उस के सिवाए कोई पनाह नहीं) **है**(18) **ऐ किताब वालो तुम्हारे पास यह हमारे पैग़म्बर** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आ पहुंचे जो कि तुम को** (शरीअ़त की बातें) **साफ़-साफ़ बताते हैं** (और) **ऐसे वक़्त में** (आए हैं जब कि) **पैग़म्बरों** (के आने) **का सिलसिला** (बहुत दिनों से) **बन्द था** (जिससे पहली शरीअ़त का इल्म गुम हो चुका था इसलिए अब किसी पैग़म्बर के आने की बहुत ज़रूरत थी) **ताकि तुम** (क़ियामत में) **यह न कहने लगो** (कि दीन के बारे में ग़लतियों में हम इसलिए मजबूर हैं कि) **हमारे पास कोई** (पैग़म्बर जो कि) **ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और** (सज़ा से) **डराने वाला** (हो) **नहीं आया** (जिससे हमें दीन की सही बात पता चलती)**, तो** (लो अब इस बात की गुन्जाइश नहीं रही क्योंकि) **तुम्हारे पास ख़ुशख़बरी सुनाने वाले व डराने वाले** (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आ चुके हैं** (अब न मानो तो अपने अन्जाम को ख़ुद सोच लो)**, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखते हैं** (कि जब चाहें अपनी रहमत से अपने पैग़म्बर भेज दें और जब चाहें हिकमत से उन को रोक लें सो किसी को वजह पूछने का हक़ नहीं और इन रसूल के आने की ख़बर तो निशानियों के साथ पहली किताबों में भी देदी गई थी)(19)।

وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَ جَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖۗ وَّ اٰتٰىكُمْ مَّا
لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝٢٠ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِيْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَ لَا تَرْتَدُّوْا عَلٰٓى

أَدْبَارِكُمْ فَتَنقَلِبُوا خَاسِرِينَ ﴿٢١﴾ قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَّارِينَ وَإِنَّا لَن نَّدْخُلَهَا حَتَّىٰ يَخْرُجُوا مِنْهَا ۚ
فَإِن يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِنَّا دَاخِلُونَ ﴿٢٢﴾ قَالَ رَجُلَانِ مِنَ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ
الْبَابَ ۚ فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُمْ غَالِبُونَ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٣﴾ قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِنَّا لَن
نَّدْخُلَهَا أَبَدًا مَّا دَامُوا فِيهَا ۖ فَاذْهَبْ أَنتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هَاهُنَا قَاعِدُونَ ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا
نَفْسِي وَأَخِي ۖ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٥﴾ قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ ۛ أَرْبَعِينَ سَنَةً ۛ
يَتِيهُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٦﴾

आयत न० 20 से 26

और (वो वक़्त भी याद कीजिए) **जब मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने अपनी क़ौम** (यानी बनी इस्राईल) **से** (जिहाद के बारे में समझाने के लिए शुरू में यह) **कहा कि ऐ मेरी क़ौम तुम अल्लाह तआ़ला की** (उस) **नेमत को याद करो जो तुम पर हुई है कि उस ने तुम में बहुत से पैग़म्बर बनाए** (जैसे हज़रत याकूब और हज़रत यूसुफ़ और ख़ुद हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलैहिमुस्सलाम) **और** (यह नेमत भी कि) **तुम को बादशाह बनाया** (जैसे फ़िरऔन के मुल्क पर अभी क़ब्ज़ा किया है)**, और तुम को** (कुछ कुछ) **वो चीज़ें दी हैं जो दुनिया जहान वालों में से किसी को नहीं दी थी** (जैसे पानी में रास्ता देना दुशमन को उस में डुबो देना)**(20) ऐ मेरी क़ौम** (इन नेमतों और अहसानों का तक़ाज़ा यह है कि तुम को जो इस जिहाद के बारे में अल्लाह का हुक्म हुआ है उस पर तैयार हो जाओ और) **इस बरकत वाले मुल्क** (यानी शाम की राजधानी) **में** (जिहाद के इरादे से) **दाख़िल हो जाओ कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे हिस्से में लिख दिया है** (इस लिए इरादा करते ही जीत होगी) **और पीछे** (वतन की तरफ़) **वापस मत चलो कि फिर बिल्कुल ही नुक़सान उठाने वालों में हो जाओगे** (दुनिया में भी कि हुकूमत न बढ़ा पाओगे और आख़रत में भी कि जिहाद छोड़ने का गुनाह होगा)**(21) वो कहने लगे या मूसा वहां तो बड़े ताक़तवर लोग** (रहते) **हैं और हम तो वहां हरगिज़ क़दम न रक्खेंगे जब तक कि वो** (किसी तरह) **वहां से न निकल जाएं हां अगर वो वहां से कहीं और चले जाएं तो हम बेशक** (वहां) **जाने को तैयार हैं(22)** (मूसा अलैहिस्सलाम का साथ देते हुए) **उन दो आदमियों ने** (भी) **जो कि** (अल्लाह से) **डरने वालों** (यानी परहेज़गारों) **में से थे** (और) **जिन पर अल्लाह तआ़ला ने महरबानी की थी** (उन कम हिम्मत लोगों को समझाते हुए) **कहा कि तुम उन पर** (चढ़ाई करके इस शहर के) **दरवाज़े तक तो**

चलो सो जिस वक़्त तुम दरवाज़े में क़दम रक्खोगे उसी वक़्त जीत जाओगे (मतलब यह कि जल्दी जीत हो जाएगी चाहे रौब से भाग जाएं या थोड़ा ही मुक़ाबिला करना पड़े)**, और अल्लाह पर भरोसा रक्खो अगर तुम ईमान रखते हो(23)** (लेकिन वो) **कहने लगे कि या मूसा हम तो हरगिज़ कभी भी वहां क़दम न रक्खेंगे जब तक वो लोग वहां मौजूद हैं** (अगर लड़ना ऐसा ही ज़रूरी है) **तो आप और आप के अल्लाह मियां चले जाएं और दोनों** (जाकर) **लड़ भिड़ लीजिए हम तो यहां से सरकते नहीं(24)** (मूसा अलैहिस्सलाम परीशान और तंग आकर) **दुआ करने लगे कि या मेरे रब** (मैं क्या करूं इन पर कुछ बस नहीं चलता लेकिन) **अपनी जान और अपने भाई पर** (पूरा) **ज़ोर है कि आप हम दोनो** (भाइयों) **के और इस नाफ़रमान क़ौम के बीच** (ठीक) **फ़ैसला कर दीजिए(25)** (अल्लाह का) **हुक्म हुआ** (अच्छा) **तो** (हम यह फ़ैसला करते हैं कि) **यह मुल्क उनके हाथ चालीस साल तक न लगेगा** (और घर जाना भी नसीब न होगा रास्ता ही न मिलेगा) **यूं ही** (चालीस साल तक) **ज़मीन में भटकते फिरेंगे** (हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जो यह फ़ैसला सुना तो दुखी होने लगे तो तसल्ली दी गई कि इन बाग़ियों के लिए ये ही सज़ा ठीक है) **तो आप इस नाफ़रमान क़ौम** (की इस हालत) **पर** (ज़रा) **ग़म न कीजिए(26)।**

नोटः- बस इस सज़ा में तिया के मैदान में भटकते रहे फिर उन की औलाद में जो लोग पैदा हुए उनके हाथों वो मुल्क जीत गया।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ؕ قَالَ
لَاَقْتُلَنَّكَ ؕ قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٧﴾ لَئِنْۢ بَسَطْتَّ اِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِيْ مَاۤ اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِيَ
اِلَيْكَ لِاَقْتُلَكَ ۚ اِنِّيْۤ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾ اِنِّيْۤ اُرِيْدُ اَنْ تَبُوْٓاَ بِاِثْمِيْ وَاِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ
النَّارِ ۚ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾ فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِيْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٣٠﴾ فَبَعَثَ اللّٰهُ
غُرَابًا يَّبْحَثُ فِي الْاَرْضِ لِيُرِيَهٗ كَيْفَ يُوَارِيْ سَوْءَةَ اَخِيْهِ ؕ قَالَ يٰوَيْلَتٰۤى اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا
الْغُرَابِ فَاُوَارِيَ سَوْءَةَ اَخِيْ ۚ فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِيْنَ ﴿٣١﴾ مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۚ كَتَبْنَا عَلٰى بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ اَنَّهٗ مَنْ
قَتَلَ نَفْسًاۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِي الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَاۤ اَحْيَا
النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ ۫ ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ﴿٣٢﴾

आयत न० 27 से 32

और (ऐ पैग़म्बर) **आप इन** (किताब वालों) **को** (हज़रत) **आदम** (अलैहिस्सलाम) **के दो बेटों** (यानी हाबील व क़ाबील) **का क़िस्सा सही-सही पढ़ कर सुनाइये** (ताकि ख़ुद को नेकों की औलाद समझने का घमन्ड जाता रहे), **जब कि दोनों ने** (अल्लाह तआ़ला के नाम की) **एक-एक क़ुरबानी पेश की और उन में से एक की** (यानी हाबील की) **तो क़ुबूल हो गई और दूसरे की** (यानी क़ाबील की) **क़ुबूल नहीं हुई** (क्योंकि जिस बात के फ़ैसले के लिए यह क़ुरबानी पेश की गई थी उसमें हाबील हक़ पर था), **वो दूसरा** (यानी क़ाबील इसमें भी हारा तो झल्लाकर) **कहने लगा मैं तुझ को ज़रूर क़त्ल करूंगा, उस एक ने** (यानी हाबील ने) **जवाब दिया** (कि तेरा हारना तेरी ग़लती की वजह से है मेरा क्या क़ुसूर क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला परहेज़गारों की** (क़ुरबानी) **क़ुबूल करते हैं**(27) (मैंने तो पक्का इरादा कर लिया है कि) **अगर तू मुझ पर मेरे क़त्ल करने के इरादे से हाथ उठाएगा तब भी मैं तुझ पर तेरे क़त्ल करने के लिए हरगिज़ हाथ उठाने वाला नहीं** (क्योंकि) **मैं तो अल्लाह तआ़ला से डरता हूं जो सारे जहानों का रब है**(28) **मैं तो यह चाहता हूं कि** (मुझसे कोई गुनाह का काम न हो चाहे तू मुझ पर कितना ही ज़ुल्म क्यों न करे जिससे कि) **तू मेरे गुनाह और अपने गुनाह सब अपने सर रख ले फिर तू दोज़ख़ियों में शामिल हो जाए, और ये ही सज़ा होती है ज़ुल्म करने वालों की**(29) **सो** (यूं तो पहले ही से क़त्ल का इरादा कर चुका था जब देखा कि बचाव भी न करेगा तो और भी) **उस के जी ने उस को अपने भाई के क़त्ल पर उभार दिया** (फिर) **आख़िर उस को क़त्ल ही कर दिया जिससे** (बद नसीब) **बड़े नुक़सान उठाने वालों में शामिल हो गया** (दुनिया में तो यह नुक़सान कि भाई खो दिया और आख़िरत में यह नुक़सान कि सख़्त अ़ज़ाब होगा)(30) **फिर** (परीशान हुआ कि लाश को कहां छुपाऊं तो) **अल्लाह तआ़ला ने एक कव्वा** (वहां) **भेजा कि वो** (चोन्च और पन्जों से) **ज़मीन को खोदता था** (और खोद कर एक दूसरे मरे हुए कव्वे को उस गढ़े में ढकेल कर उस पर मिट्टी डालता था) **ताकि वो** (कव्वा) **उस** (क़ाबील) **को सिखाए कि अपने भाई** (हाबील) **की लाश को किस तरीक़े से छुपाए,** (यह देख कर क़ाबील अपने जी में पछता कर) **कहने लगा कि अफ़सोस है मेरी हालत पर क्या मैं इस कव्वे जैसा भी न हो सका कि अपने भाई की लाश को कहीं छुपा देता तो** (अपनी इस हालत पर) **बड़ा पछताया**(31) **इसी** (क़िस्से की) **वजह से हम ने** (सभी लोगों पर और) **बनी इस्राईल पर** (ख़ास कर) **यह** (हुक्म) **लिख दिया** (यानी ठहरा दिया) **कि** (नाहक़ क़त्ल इतना बड़ा गुनाह है कि) **जो आदमी किसी आदमी को बिना किसी दूसरे आदमी की जान के बदले** (जो

नाहक़ क़त्ल हुआ हो) **या बिना किसी** (फ़ितने व) **फ़साद के जो ज़मीन में उससे फैला हो** (बेबात) **क़त्ल कर दे तो** (उस को कुछ सूरतों में ऐसा गुनाह होगा कि) **जैसे उसने सभी इन्सानों को क़त्ल कर दिया, और** (यह भी लिख दिया था कि) **जो आदमी किसी की जान बचा ले तो** (उस को ऐसा सवाब मिलेगा) **जैसे उस ने सभी इन्सानों की जान बचा ली, और उनके** (यानी बनी इस्राईल के) **पास** (इस हुक्म के आ जाने के बाद) **हमारे बहुत से पैग़म्बर भी खुले सबूत** (पैग़म्बरी के) **लेकर आए** (और वक़्त-वक़्त पर समझाते रहे) **मगर फिर इस** (समझाने) **के बाद भी बहुत से उन में से दुनिया में फ़साद करने वाले ही रहे** (और उन पर कुछ असर न हुआ यहां तक कि कुछ ने उन पैग़म्बरों ही को क़त्ल कर दिया)(32)।

नोटः- हज़रत आदम और हज़रत हव्वा अलैहिमुस्सलाम के एक बार में दो बच्चे होते थे, एक लड़का और एक लड़की और क़ानून से उन दोनों का सगे भाई बहन की तरह आपस में निकाह हराम ठहराया गया बल्कि दूसरी बार से पैदा होने वाले लड़के और लड़की से उन का निकाह उस वक़्त के क़ानून से हो सकता था लेकिन हुआ यह कि जो लड़की क़ाबील के साथ पैदा हुई वो उससे निकाह करने की ज़िद करने लगा और दूसरी लड़की उस को पसन्द नहीं थी। क़ाबील की तसल्ली के लिए यह तय पाया कि दोनों अल्लाह के नाम की कुरबानी पेश करेंगे जिस की कुरबानी कुबूल हो जाए वो मुक़द्दमे में जीता। और कुरबानी कुबूल होने की निशानी यह थी कि जिस की कुरबानी को आसमानी आग खा जाती वो कुबूल मानी जाती बस हाबील की कुरबानी कुबूल हुई यह देख कर क़ाबील आग बबूला हो गया और भाई के क़त्ल को तैयार हो गया।

إِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ يَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ
اَيْدِيْهِمْ وَ اَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ
عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۙ﴿۳۳﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۳۴﴾

आयत न० 33 से 34

जो लोग अल्लाह तआ़ला से और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **से लड़ते हैं और** (इस लड़ने का मतलब यह है कि) **मुल्क में फ़साद** (यानी बदअमनी) **फैलाते फिरते हैं** (यानी डाके डालते हैं) **उन की ये सज़ा है कि** (एक हालत में तो) **क़त्ल किये जाएं** (वो हालत यह है कि उन डाकुओं ने किसी को सिर्फ़ क़त्ल किया हो और माल लूटने की नौबत न आई हो) **या** (अगर

दूसरी हालत हुई हो तो) **फांसी दिये जाए** (यह वो हालत है कि उन्होंने माल भी लूटा हो और क़त्ल भी किया हो) **या** (अगर तीसरी हालत हुई हो तो) **उनके हाथ और पैर उल्टी तरफ़ से** (यानी दाहिना हाथ बायां पैर) **काट दिये जाएं** (यह वो हालत है कि सिर्फ़ माल लूटा हो क़त्ल न किया हो) **या** (अगर चौथी हालत हुई हो तो) **ज़मीन पर** (आज़ाद रहने) **से निकाल** (कर जेल भेज) **दिये जाएं** (यह वो हालत है कि न माल लूटा हो न क़त्ल किया हो इरादा करने के बाद ही पकड़े गये हों), **यह** (बताई सज़ा तो) **उन के लिए दुनिया में बड़ी रूसवाई** (और बदनामी) **है और उन को आख़िरत में** (जो) **बड़ा अ़ज़ाब होगा** (सो अलग)(33) **हां मगर जो लोग तुम्हारे गरिफ़्तार करने से पहले तौबा करलें तो** (इस हालत में) **जान लो कि बेशक अल्लाह तआ़ला** (अपने हक़) **मुआफ़ कर देंगे** (और तौबा क़ुबूल करने में) **महरबानी करेंगे** (लेकिन बन्दों का हक़ बाक़ी रहेगा बस अगर माल लूटा होगा तो वो लौटाना होगा और क़त्ल किया होगा तो उस की सज़ा जारी होगी हां अगर हक़ वाला ही मुआ़फ़ कर दे और मक़तूल के घर वाले मुआफ़ कर दें तो और बात है)(34)।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ ابْتَغُوْۤا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَ جَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝۳۵ اِنَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّ مِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۚ
وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝۳۶ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَ مَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا ۫ وَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝۳۷ وَ
السَّارِقُ وَ السَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْۤا اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝۳۸ فَمَنْ تَابَ
مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَ اَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۳۹ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝۴۰

आयत न० 35 से 40

ऐ ईमान वालो अल्लाह तआ़ला (की नाराज़ी) **से डरो** (यानी गुनाह छोड़ दो) **और** (ताबेदारी व नेक कामों के वास्ते से) **उस की नज़दीकी तलाश करो** (यानी ज़रूरी हुक्मों के पाबन्द रहो) **और** (ख़ास कर) **अल्लाह तआ़ला की राह में जिहाद किया करो उम्मीद है कि** (इस तरह से) **तुम** (पूरे) **कामयाब हो जाओगे** (और कामयाबी अल्लाह का राज़ी हो जाना और दोज़ख़ से छुटकारा पाना है)(35) **बेशक जो लोग काफ़िर हैं अगर** (मान लो) **उन** (में से हरेक) **के पास दुनिया भर की सारी चीज़ें हों** (जिस में सभी ख़ज़ाने आ गये) **और** (फिर उसी पर बस नहीं बल्कि) **उन चीज़ों के**

साथ उतनी ही चीज़ें और भी हों ताकि वो उस को देकर क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब से छूट जाएं तब भी वो चीज़ें हरगिज़ उन से क़ुबूल न की जाएंगी, और (अ़ज़ाब से न बचेंगे बल्कि) **उन को दर्दनाक अ़ज़ाब होगा(36)** (फिर अ़ज़ाब में दाख़िल हो जाने के बाद वो) **यह चाहेंगे कि दोज़ख़ से** (किसी तरह) **निकल आएं और** (यह चाहत कभी पूरी नहीं होगी) **इससे कभी नहीं निकलेंगे, और उन को सदा का अज़ाब होगा(37) और जो मर्द चोरी करे और** (इसी तरह) **जो औरत चोरी करे तो** (उन का हुक्म यह है कि ऐ हाकिमों) **उन दोनों के दाहिने हाथ** (गट्टे पर से) **काट दो उन की** (इस) **करतूत के बदले में** (और यह बदला) **सज़ा के तौर पर** (है) **अल्लाह की तरफ़ से, और अल्लाह तआ़ला बड़ी ताक़त वाले हैं** (जो सज़ा चाहे तय कर दें और) **बड़ी हिकमत वाले** (हैं कि सही सज़ा तय करते) **हैं(38) फिर जो आदमी** (शरीअ़त के क़ाइदे से) **तौबा करले अपनी इस ग़लती** (यानी चोरी) **करने के बाद और** (आगे के लिए) **सुधार कर ले** (यानी चोरी जैसी ग़लती न करे अपनी तौबा पर जमा रहे) **तो बेशक अल्लाह तआ़ला उसकी तौबा क़ुबूल करेंगे, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़े मुआफ़ करने वाले बड़ी रहमत वाले हैं(39) क्या तुम नहीं जानते** (यानी सब जानते हैं) **कि आसमानों और ज़मीन की हुकूमत सिर्फ़ अल्लाह ही की है, वो जिस को चाहें सज़ा दें और जिस को चाहे मुआफ़ कर दें, और अल्लाह तआ़ला को हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत है(40)।**

नोटः- चोरी की सज़ा में हाथ काटने का हुक्म हर चोरी के लिए नहीं बल्कि उस की कुछ शर्तें हैं एक तो चुराया हुआ माल किसी एक का या कुछ लोगों का हो चुराने वाले का उस में कोई हिस्सा न हो दूसरे माल हिफ़ाज़त से रक्खा हुआ हो आम लोगों की उस तक पहुंच न हो तीसरे बिना इजाज़त लिया गया हो यानी उस के बरतने की उसे इजाज़त न हो चौथे यह कि छुपा कर लिया गया हो अगर ऐलानिया लूटा जाए तो वो चोरी नहीं डाका है तो अगर ये शर्तें न पाई जाएं तो हाथ काटने की सज़ा नहीं बल्कि दूसरी सज़ाओं में कोई सज़ा दी जाएगी।

يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوْبُهُمْ ۛ
وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛ سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ؕ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ مِنْۢ بَعْدِ
مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ اِنْ اُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ وَاِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ؕ وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ
لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ؕ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۖۚ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ

عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٤١﴾ سَمّٰعُونَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُونَ لِلسُّحْتِ ؕ فَاِنْ جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَ اِنْ
تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَيْـًٔا ؕ وَ اِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَ
كَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَ عِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَ مَاۤ اُولٰٓئِكَ
بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٣﴾

आयत न० 41 से 43

नोटः- यहूदियों में से कुछ लोग क़त्ल और बदकारी का फ़ैसला अपनी मन मर्ज़ी से कराने के इरादे से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आए उन में कुछ मुनाफ़िक़ भी शामिल थे जो अपनों में बैठ कर मुसलमानों का मज़ाक़ उड़ाते थे उस बारे में यह आयें उतरीं:-

ऐ पैग़म्बर जो लोग कुफ़्र (की बातों) **में दौड़-दौड़ कर गिरते हैं** (यानी बेझिजक शौक़ से इन बातों को करते हैं) **आप को वो दुखी न करें** (यानी आप उन की कुफ़्र की बातों से दुखी न हों) **चाहे वो उन लोगों में से हों जो अपने मुंह से तो** (झूटमूट) **कहते हैं कि हम ईमान ले आए और उन के दिल ईमान** (यानी यक़ीन) **लाए नहीं** (मुराद मुनाफ़िक़ लोग हैं) **और चाहे वो उन लोगों में से हों जो कि यहूदी हैं, ये** (दोनो क़िस्म के) **लोग** (पहले से दीन के बारे में हुक्म बदल देने वाले अपने आलिमों से) **ग़लत बातें सुनने के आदी हैं** (और उन्हीं बातों की हिमायत में यहां आकर) **आप की बातें दूसरी क़ौम के लिए कान लगा कर सुनते हैं जिस क़ौम की यह हालत है कि** (एक तो) **आप के पास** (घमन्ड और दुशमनी की वजह से ख़ुद) **नहीं** (आए बल्कि दूसरों को भेजा और वो भी शरीअत का हुक्म जानने के लिए नही बल्कि अपने मतलब का फ़ैसला कराने के लिए) **आए,** (और अल्लाह के) **कलाम को सही होने के बावजूद** (लफ़्ज़ों से या मतलब से या दोनो तरह से) **बदलते रहते हैं** (और) **कहते हैं कि अगर तुम को** (वहां जाकर) **यह** (बदला हुआ) **हुक्म मिले तब तो उस को मान लेना और अगर तुम को यह** (बदला हुआ) **हुक्म न मिले तो** (इस को मानने से) **बचते रहना, और** (असल बात यह है कि) **जिस का ख़राब** (और गुमराह) **होना अल्लाह ही चाहे** (और वजह उस की उन का ही इरादा होती है) **तो उस** (को बचाने) **के लिए अल्लाह से तेरा कुछ ज़ोर नहीं चल सकता, ये लोग ऐसे** (ही) **हैं कि** (उन की नाफ़रमानी की वजह से) **अल्लाह तआला ने उन के दिलों को** (कुफ़्र की बातों से) **पाक करना नहीं चाहा, उन** (सब) **लोगों के लिए दुनिया में रूसवाई है और आख़रत में उन** (सब) **के लिए बड़ी सज़ा** (है

यानी दोज़ख़, बस मुनाफ़िक़ों की यह रूसवाई हुई कि उन का ढोंग खुल गया और उन को सब गिरी नज़रों से देखते थे और यहूदियों के क़त्ल, क़ैद व जलावतन होने के क़िस्से मशहूर हैं और आख़रत का अज़ाब होना ही) **है(41) ये लोग** (दीन के बारे में) **ग़लत बातों के सुनने के आदी हैं** (और) **बड़े हराम** (माल) **के खाने वाले हैं** (इसी लालच ने इन को ग़लत हुक्म बयान करने का आदी कर दिया है), **तो अगर ये लोग** (अपना कोई मुक़दमा लेकर) **आप के पास** (फ़ैसला कराने) **आएं तो** (आप की मर्ज़ी है) **चाहे आप उन** (के मुआमले) **में फ़ैसला कर दीजिए या उन को टाल दीजिए और अगर आप उन को टाल देंगे तो** (यह खटका न रखिए कि शायद नाख़ुश हो कर दुशमनी निकालें क्योंकि) **उन की हिम्मत नहीं कि आप को ज़रा भी नुक़सान पहुंचा सकें** (क्योंकि अल्लाह तआ़ला आप के रखवाले हैं), **और अगर** (फ़ैसला करना चाहें और) **आप फ़ैसला करें तो उनमें इन्साफ़** (यानी इस्लामी क़ानून) **से फ़ैसला कीजिए, बेशक अल्लाह तआ़ला इन्साफ़ करने वालों से मुहब्बत करते हैं** (और अब वो इन्साफ़ इस्लामी क़ानून में है बस वो ही लोग प्यारे होंगे जो इस क़ानून के हिसाब से फ़ैसला करें)(42) **और** (हैरानी की बात है कि) **वो** (दीन के बारे में) **आप से कैसे फ़ैसला कराते हैं जब कि उन के पास तौरेत** (मौजूद) **है जिसमें अल्लाह का हुक्म** (लिखा) **है** (जिस को मानने का वो दावा करते हैं) **फिर इस** (फ़ैसला लाने) **के बाद** (जब आप का फ़ैसला सुनते हैं तो उस फ़ैसले से भी) **हट जाते हैं, और** (इसी से हर समझदार को अन्दाज़ा हो गया होगा कि) **ये लोग हरगिज़ यक़ीन लाने वाले नहीं हैं** (और जिस तरह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर इन को यक़ीन नही इसी तरह अपनी किताब पर भी पूरा यक़ीन नहीं वर्ना इस को छोड़ कर क्यों आते बस दोनो तरफ़ से गये)(43)।

اِنَّآ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّ نُوْرٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا وَ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَ
الْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَ كَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَ اخْشَوْنِ وَ لَا تَشْتَرُوْا
بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ وَ مَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَ كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيْهَآ اَنَّ النَّفْسَ
بِالنَّفْسِ ۙ وَ الْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَ الْاَنْفَ بِالْاَنْفِ وَ الْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَ السِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ وَ الْجُرُوْحَ قِصَاصٌ ؕ
فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ؕ وَ مَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَ قَفَّيْنَا عَلٰٓى
اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ۪ وَ اٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّ نُوْرٌ ۙ وَّ
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ هُدًى وَّ مَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۶﴾ وَ لْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ

فِيْهِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ
يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَ مُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ
الْحَقِّ ۚ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّ مِنْهَاجًا ۚ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ
اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۚ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَ اَنِ احْكُمْ
بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْ بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ۚ فَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ۚ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ﴿٤٩﴾ اَفَحُكْمَ
الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٥٠﴾

आयत न० 44 से 50

हमने (मूसा अलैहिस्सलाम पर) **तौरेत उतारी थी जिस में** (सही अक़ीदों की) **हिदायत और** (हुक्मों का) **नूर था,** (बनी इस्राईल के) **पैग़म्बर जो कि अल्लाह तआ़ला के ताबेदार थे इस** (तौरेत) **के मुवाफ़िक़ यहूदियों को हुक्म दिया करते थे और** (इसी तरह उन में के) **अल्लाह वाले और आलिम भी** (उसी के मुवाफ़िक़ हुक्म देते थे कि उस वक़्त की शरीअ़त वो ही थी) **इस वजह से कि उन** (अल्लाह वालों और आलिमों) **को उस अल्लाह की किताब** (के हुक्मों पर चलने और चलाने) **की देख भाल का हुक्म** (पैग़म्बरों के वास्ते से) **दिया गया और उन्होंने उस को मान लिया** (और सदा उस के पाबन्द रहे)**, तो** (ऐ इस ज़माने के यहूदी आ़लिमों और सरदारो) **तुम भी** (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैग़म्बरी की तस्दीक़ के बारे में जिस का हुक्म तौरेत में है) **लोगों से** (यह) **खटका मत करो** (कि हम तस्दीक़ कर लेंगे तो आम लोगों की नज़रों में हमारी इ़ज़्ज़त न रहेगी) **और** (सिर्फ़) **मुझ से डरो और मेरे हुक्मों के बदले में** (दुनिया का) **थोड़ा मोल मत लो** (जो कि तुम को लोगों से मिलता है कि ये ही माल की मुहब्बत ईमान लाने में रूकावट है)**, और** (याद रक्खो कि) **जो आदमी अल्लाह तआ़ला के भेजे हुए के मुवाफ़िक़ फ़ैसला न करे** (बल्कि जान बूझ कर शरीअ़त के ख़िलाफ़ हुक्म बताए) **तो ऐसे लोग बिल्कुल काफ़िर हैं(44) और हम ने उन** (यहूदियों) **पर उस** (तौरेत) **में यह बात फ़र्ज़ की थी कि** (अगर कोई किसी को नाहक़ जान बूझ कर क़त्ल या ज़ख़्मी करे और हक़दार दावा करे तो) **जान बदले जान के और आंख बदले आंख के और नाक बदले नाक के और कान बदले कान के और दान्त बदले दान्त के और** (इसी तरह दूसरे) **ख़ास ज़ख़्मों का भी बदला है, फिर जो आदमी** (इस क़िसास यानी बदला

लेने का हक़दार होकर भी) **इस** (क़िसास) **को मुआफ़ कर दे वो** (मुआफ़ करना) **उस** (मुआफ़ करने वाले) **के लिए** (उस के गुनाहों का) **कफ़्फ़ाराः** (यानी गुनाहों के दूर होने का सामान) **हो जाएगा** (यानी मुआफ़ करना सवाब है), **और** (चूंकि यहूदियों ने इन हुक्मों को छोड़ रक्खा था इसलिए दोबारा सुनाया जाता है कि) **जो लोग अल्लाह तआला के भेजे हुए** (हुक्म) **के मुवाफ़िक़ फ़ैसला न करें तो ऐसे लोग ज़ालिम** (हैं यानी बहुत बुरा काम कर रहे) **हैं(45) और हम ने उन** (नबियों) **के बाद** (जिन का पहले ज़िक्र आया है) **ईसा बिन मरयम** (अलैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजा कि वो अपने से पहले की किताब यानी तौरेत की तस्दीक़ करते थे, और हमने उन को इन्जील दी जिसमें** (तौरेत ही की तरह) **हिदायत थी और नूर था और वो** (इन्जील) **अपने से पहली किताब** (यानी) **तौरेत की तस्दीक़** (भी) **करती थी और वो सरासर हिदायत और नसीहत थी अल्लाह से डरने वालों के लिए(46) और** (इन्जील देकर हुक्म दिया था कि) **इन्जील वालों को चाहिए कि अल्लाह तआला ने जो कुछ उसमें उतारा है उसके मुवाफ़िक़ हुक्म किया करें, और** (ऐ इस ज़माने के ईसाइयों सुन लो कि) **जो आदमी अल्लाह तआला के भेजे हुए के मुवाफ़िक़ हुक्म न करे तो ऐसे लोग बड़े नाफ़रमान** (हैं और इन्जील मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैग़म्बर होने की ख़बर दे रही है तो आप लोग उस के ख़िलाफ़ क्यों चल रहे) **हैं(47) और** (तौरेत व इन्जील के बाद) **हम ने यह किताब** (क़ुरआन) **आप के पास भेजी है जो ख़ुद भी सच्ची है और इससे पहले जो** (आसमानी) **किताबें** (आ चुकी) **हैं** (जैसे तौरेत व इन्जील और ज़बूर) **उन की** (भी) **तस्दीक़ करती है** (कि वो अल्लाह की भेजी हुई हैं) **और** (चूंकि क़ुरआन क़ियामत तक रहेगी इस लिए यह किताब) **उन किताबों** (के सच्चा होने) **की** (सदा के लिए) **हिफ़ाज़त करने वाली है तो उन** (किताब वालों) **के आपसी मुआमलों में** (जब कि आप के सामने लाए जाएं) **इसी भेजी हुई किताब के मुवाफ़िक़ फ़ैसला किया कीजिए और यह जो सच्ची किताब आप को मिली है इससे दूर हो कर** (शरीअत के ख़िलाफ़) **उन की चाहतों पर** (आगे भी) **मत चलिए, तुम में से हर एक** (उम्मत) **के लिए** (इस के पहले) **हम ने ख़ास शरीअत और ख़ास तरीक़ा तय किया था** (जैसे यहूदियों के लिए शरीअत तौरेत व ईसाइयों के लिए इन्जील थी फिर अगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत के लिए शरीअत क़ुरआन ठहराया गया हो तो इनकार की क्या वजह), **और अगर अल्लाह तआला** (सब का एक ही तरीक़ा रखना) **चाहते तो** (वो इस पर भी क़ुदरत रखते थे कि) **तुम सब** (यहूदियों, ईसाइयों व मुसलमानों) **को** (एक ही शरीअत देकर) **एक ही उम्मत में कर देते** (और नई शरीअत न आती जिससे तुम को घबराहट होती है) **लेकिन** (अपनी हिकमत से) **ऐसा नहीं किया**

(बल्कि हर उम्मत को अलग-अलग तरीक़ा दिया) **ताकि जो दीन तुम को** (हर ज़माने में नया-नया) **दिया है उस में तुम सब को** (ताबेदारी में) **आज़माए** (कि किस किस ने कहना माना) **तो** (तुम हटधर्मी छोड़ कर) **नेकियों में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो** (यानी क़ुरआन पर ईमान लाकर उस पर चलो), **तुम सब को** (एक दिन) **अल्लाह ही के पास जाना है फिर तुम सब को बता देगा जिसमें तुम** (सच्चाई जाननें के बाद भी दुनिया में बेबात) **झगड़ा किया करते थे**(48) **और हम** (दोबारा) **हुक्म देते हैं कि आप इन** (किताब वालो) **के आपसी मुआमलों में** (जब कि आप के सामने लाए जाएं) **इस भेजी हुई किताब के मुवाफ़िक़ फ़ैसला किया कीजिए और** (शरीअत के ख़िलाफ़) **उन की चाहतों पर** (आगे भी) **मत चलिए** (जैसा कि अब तक भीं नहीं चले) **और उन से उन की इस बात से** (आगे भी पहले की तरह) **बचते रहिए कि वो आप को अल्लाह तआ़ला के भेजे हुए किसी हुक्म से भी बिचलाएं** (यानी इस का शक नहीं लेकिन इरादा भी रहे तो सवाब की बात है), **फिर** (भी) **अगर ये लोग** (क़ुरआन से और आपके फ़ैसले से जो क़ुरआन के मुवाफ़िक़ होगा) **मुंह मोड़े तो यह यक़ीन कर लीजिए कि बस अल्लाह तआ़ला ही चाहते हैं कि उन के कुछ जुर्मो पर** (दुनिया ही में) **उन का सज़ा दें, और** (ऐ पैग़म्बर उन की इन बातों का आप ग़म न कीजिए क्योंकि) **ज़्यादा आदमी तो** (दुनिया में सदा से) **नाफ़रमान ही होते** (आए) **हैं**(49) **ये लोग** (क़ुरआन के फ़ैसले को छोड़ कर) **फिर क्या जहालत के ज़माने का फ़ैसला चाहते हैं** (जिस को उन्होंने आसमानी शरीअत के ख़िलाफ़ ख़ुद घड़ लिया था), **और फ़ैसला करने में अल्लाह से कौन अच्छा** (फ़ैसला करने वाला) **होगा** (बल्कि कोई बराबर भी नहीं, लेकिन यह बात भी) **यक़ीन** (व ईमान) **रखने वालों** (ही) **के लिए** (है)(50)।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَ النَّصٰرٰۤى اَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَ مَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ
مِنْهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝۵۱ فَتَرَى الَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ
نَخْشٰۤى اَنْ تُصِيْبَنَا دَآئِرَةٌ ؕ فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِىَ بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهٖ فَيُصْبِحُوْا عَلٰى مَاۤ اَسَرُّوْا فِىْۤ
اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ ؕ۝۵۲ وَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَهٰۤؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ اِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ؕ
حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ ۝۵۳ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِى اللّٰهُ
بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَ يُحِبُّوْنَهٗۤ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۟ يُجَاهِدُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ لَا

يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۴﴾ اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ هُمْ رٰكِعُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَ مَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿۵۶﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّ لَعِبًا مِّنَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَ الْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۵۷﴾ وَ اِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى
الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا وَّ لَعِبًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿۵۸﴾

आयत न० 51 से 58

ऐ ईमान वालो तुम (मुनाफ़िक़ों की तरह) **यहूदियों व ईसाइयों को** (अपना दिली) **दोस्त मत बनाना, वो** (ख़ुद ही) **एक दूसरे के दोस्त हैं** (यानी यहूदी-यहूदी आपस में और ईसाई-ईसाई आपस में), **और जो आदमी तुम में से उन के साथ** (ऐसी) **दोस्ती करेगा बेशक वो** (कुछ ख़ास बातों में) **उन्हीं में से होगा** (यानी उन्हीं में गिना जाएगा), **बेशक अल्लाह तआ़ला** (इस बात की) **समझ ही नहीं देते उन लोगों को जो** (काफ़िरों से दोस्ती करके) **अपना नुक़सान कर रहे हैं** (यानी दोस्ती की धुन में यह बात उन की समझ में नहीं आती)(51) **इसीलिए तुम ऐसे लोगों को जिन के दिल में** (निफ़ाक़ यानी मुनाफ़िक़ होने की) **बीमारी है देखते हो कि दौड़-दौड़ कर उन** (काफ़िरों) **में घुसते हैं** (और कोई ऐतराज़ करे तो बात बनाने के लिए यह) **कहते हैं कि** (हम उन से दिल से नहीं मिलते बल्कि दिल से तुम्हारे साथ हैं उन से तो सिर्फ़ इस लिए मिलते हैं कि) **हम को ख़तरा है कि** (अगर अकाल जैसी) **कोई मुसीबत हम पर पड़ जाए** (और ये यहूदी हमारे साहुकार हैं फिर उधार क़र्ज़ मिलने में परीशान हो मगर दिल में यह बात छुपी थी कि अगर ये लोग मुसलमानों से जीत गये तो क्या होगा इसलिए उन से दोस्ती रखना ज़रूरी है), **सो जल्दी उम्मीद** (यानी वादा) **है कि अल्लाह तआ़ला** (मुसलमानों को पूरी) **कामयाबी देदे** (उन काफ़िरों के मुक़ाबिले में जिन से ये दोस्ती कर रहे हैं) **या और कोई ख़ास बात अपनी तरफ़ से दिखा दे** (यानी उनका मुनाफ़िक़ होना खोल दिया जाए) **फिर** (उस वक़्त) **अपने दिल में छुपी** (पिछली) **बातों पर पछताएंगे** (कि हम क्या समझते थे कि काफ़िरों की जीत होगी और यह उस के उलट हो गया)(52) **और** (उस वक़्त) **मुसलमान लोग** (हैरत से एक दूसरे से) **कहेंगे अरे क्या ये वो ही लोग हैं जो बड़े ज़ोर शोर से** (हमारे सामने) **क़समें खाया करते थे कि हम** (दिल से) **तुम्हारे साथ हैं** (यह तो कुछ और ही साबित हुआ, अल्लाह तआ़ला कहते हैं कि) **उन लोगों की सारी कार्रवाइयां** (कि दोनो गिरोह से भला बना रहना

चाहते थे सब) **बर्बाद गईं जिससे** (दोनों तरफ़ से) **नाकाम रहे** (क्योंकि काफ़िर तो हार गये और मुसलमानों के सामने उनकी पोल खुल गई)(53) **ऐ ईमान वालो जो लोग तुम में से अपने** (इस) **दीन से फिर जाएं तो** (इस्लाम का कोई नुक़सान नहीं क्योंकि इस्लामी ख़िदमत के लिए) **अल्लाह तआ़ला बहुत जल्द** (उन की जगह) **ऐसी क़ौम को पैदा कर देगा जिन से अल्लाह तआ़ला को मुहब्बत होगी और उन को अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत होगी वो मुसलमानों पर महरबान** (और नर्म) **होंगे** (और) **काफ़िरों पर तेज़** (और सख़्त) **होंगे,** (कि उन से) **जिहाद करते होंगे अल्लाह की राह में और** (दीन और जिहाद के बारे में) **वो लोग किसी बुरा भला कहने वाले के बुरा कहने की परवा न करेंगे, ये** (बताई गई अच्छाइयां) **अल्लाह तआ़ला की महरबानी हैं जिस को चाहें दें, और अल्लाह बड़ी गुन्जाइश वाले हैं** (कि अगर चाहें तो सब को ये अच्छाइयां दे सकते हैं लेकिन) **बड़े इल्म वाले** (भी हैं जिस को ठीक समझते हैं उसी को देते) **हैं**(54) (मुसलमानो) **तुम्हारे दोस्त तो** (जिन से तुम को दोस्ती रखना चाहिए) **अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **और ईमान वाले लोग हैं जो कि नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं और ज़कात देते हैं और** (अल्लाह के सामने) **गिड़गिड़ाते हैं** (यानी अपनी इबादतों पर नाज़ नहीं करते)(55) **और जो आदमी** (बताए हुए तरीक़े पर) **अल्लाह से दोस्ती रक्खेगा और उस के रसूल से और ईमान वालों से तो** (वो अल्लाह के गिरोह में दाख़िल हो गया और) **अल्लाह का गिरोह बेशक कामयाब** (रहने वाला) **है** (और काफ़िर नाकाम हैं)(56) **ऐ ईमान वालो जिन लोगों को तुम से पहले** (आसमानी) **किताब** (यानी तौरेत व इन्जील) **मिल चुकी है** (मुराद यहूदी व ईसाई हैं) **जो ऐसे हैं कि उन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी खेल बना रक्खा है** (जो निशानी है झुटलाने की) **उन को और** (इसी तरह) **दूसरे काफ़िरों को** (भी जैसे मुशरिक लोग) **दोस्त मत बनाओ, और अल्लाह तआ़ला से डरो अगर तुम ईमान वाले हो** (यानी ईमान वाले तो हो ही बस जिस चीज़ से अल्लाह तआ़ला ने मना किया है उस को मत करो)(57) **और जब तुम नमाज़ के लिए** (अज़ान से) **ऐलान करते हो तो वो लोग** (तुम्हारी) **इस** (इबादत) **के साथ** (जिसमें अज़ान और नमाज़ दोनों आ गईं) **हंसी और खेल करते हैं,** (और) **यह** (हरकत) **इस वजह से है कि वो लोग बिल्कुल समझ नहीं रखते** (वर्ना हक़ बात को समझते और इसके साथ हंसी न करते)(58)।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّاۤ اِلَّاۤ اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَ مَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ وَ اَنَّ اَكْثَرَكُمْ
فٰسِقُوْنَ ۝٥٩ قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَ غَضِبَ عَلَيْهِ وَ جَعَلَ

مِنۡهُمُ الۡقِرَدَةَ وَ الۡخَنَازِيۡرَ وَ عَبَدَ الطَّاغُوۡتَ ؕ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّ اَضَلُّ عَنۡ سَوَآءِ السَّبِيۡلِ ۝٦٠ وَ اِذَا
جَآءُوۡكُمۡ قَالُوۡۤا اٰمَنَّا وَقَدۡ دَّخَلُوۡا بِالۡكُفۡرِ وَهُمۡ قَدۡ خَرَجُوۡا بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ اَعۡلَمُ بِمَا كَانُوۡا يَكۡتُمُوۡنَ ۝٦١ وَتَرٰى كَثِيۡرًا
مِّنۡهُمۡ يُسَارِعُوۡنَ فِى الۡاِثۡمِ وَالۡعُدۡوَانِ وَ اَكۡلِهِمُ السُّحۡتَ ؕ لَبِئۡسَ مَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ۝٦٢ لَوۡلَا يَنۡهٰهُمُ الرَّبّٰنِيُّوۡنَ
وَالۡاَحۡبَارُ عَنۡ قَوۡلِهِمُ الۡاِثۡمَ وَ اَكۡلِهِمُ السُّحۡتَ ؕ لَبِئۡسَ مَا كَانُوۡا يَصۡنَعُوۡنَ ۝٦٣

आयत न० 59 से 63

आप (उन से) **कह दीजिए कि ऐ किताब वालो तुम्हें इस के सिवा हमारी कौन सी बात बुरी लगती है कि हम ईमान लाए हैं अल्लाह पर और इस किताब पर जो हमारे पास भेजी गई है** (यानी क़ुरआन) **और उस किताब पर** (भी) **जो** (हम से) **पहले भेजी जा चुकी है** (यानी तुम्हारी किताब तौरेत व इन्जील) **इस के बावजूद कि तुम में से अक्सर लोग ईमान से ख़ाली** (हैं कि न क़ुरआन पर उन का ईमान और न तौरेत व इन्जील पर उन का ईमान है क्योंकि उन किताबों में क़ुरआन और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का हुक्म मौजूद है क़ुरआन पर ईमान न लाने का मतलब यह है कि तौरेत व इन्जील पर भी ईमान नहीं जब कि हम सब किताबों पर ईमान रखते) **हैं(59)** (और) **आप उन से** (यह भी) **कह दीजिए कि** (अगर इस पर भी तुम हमारे तरीक़े को बुरा समझते हो तो आओ) **क्या मैं** (अच्छे और बुरे में पहचान के लिए) **तुम को ऐसा तरीक़ा बताऊं जो** (हमारे) **इस** (तरीक़े) **से भी** (जिस को तुम बुरा समझ रहे हो) **अल्लह के यहां सज़ा मिलने में ज़्यादा बुरा हो, वो उन लोगों का तरीक़ा है जिन को** (उस तरीक़े की वजह से) **अल्लाह तआला ने अपनी रहमत से दूर कर दिया हो और उन पर ग़ुस्सा किया हो और उन को बन्दर और सुअर बना दिया हो और उन्होंने शैतान की इबादत की हो** (अब देख लो कि कौन सा तरीक़ा बुरा है), **ऐसे लोग** (जिन का तरीक़ा अभी बताया गया आख़रत में) **बहुत बुरे ठिकाने वाले हैं** (क्योंकि वो ठिकाना दोज़ख़ है) **और** (दुनिया में) **सीधे रास्ते से भी बहुत दूर** (हैं इशारा यह है कि तुम हम पर हंसते हो जब कि जो बातें बताई गईं वो तुम में पाई जाती) **हैं(60)** **और जब ये** (मुनाफ़िक़) **लोग तुम लोगों के पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए हैं हालांकि वो कुफ़्र ही ले कर** (मुसलमानों के पास) **आए थे और कुफ़्र ही को लेकर चले गये, और अल्लाह तआला तो अच्छी तरह जानते हैं जिस को ये** (अपने दिल में) **छुपाए हुए हैं** (इसलिए इनका मुसलमान होने का दिखावा अल्लाह तआला के सामने नहीं चलेगा और कुफ़्र की सज़ा से

वास्ता होगा)(61) **और आप इन** (यहूदियों) **में बहुत आदमी ऐसे देखते हैं जो दौड़-दौड़ कर गुनाह** (यानी झूट) **और ज़ुल्म और हराम** (माल) **खाने पर गिरते हैं, सचमुच उन के ये काम बहुत बुरे हैं**(62) (और) **उन के** (मज़हब के) **सूफ़ी और आलिम उन को गुनाह की बात कहने से और हराम खाने से** (मसअला और बात जानने के बावजूद) **क्यों नहीं मना करते, सचमुच उन की यह आदत बहुत बुरी है**(63)।

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि सिर्फ़ ख़ुद बुराई से बचे रहना काफ़ी नहीं बल्कि जहां तक हो सके दूसरों को भी बुराई से रोकना और नसीहत करते रहना ज़रूरी है।

وَ قَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ؕ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَ لُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَآءُ ؕ
وَ لَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّ كُفْرًا ؕ وَ اَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ اِلٰى
يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ كُلَّمَاۤ اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَ يَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا ؕ وَ اللّٰهُ لَا يُحِبُّ
الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۶۴﴾ وَ لَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَ اتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَ لَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿۶۵﴾ وَ
لَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَ الْاِنْجِيْلَ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ
مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ؕ وَ كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۶۶﴾ يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَ اِنْ
لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۶۷﴾

आयत न० 64 से 67

नोटः- यहूदियों में से कुछ लोगों ने रोज़ी की तंगी में अल्लाह तआ़ला की शान में यह बे अदबी की बात कही कि नऊ़ज़ुबिल्लाह अल्लाह तआ़ला कंजूस हो गये हैं या उन के ख़ज़ाने में कमी आ गई है उस पर ये आयते उतरीं:-

और यहूदियों ने कहा कि अल्लाह तआ़ला का हाथ बन्द हो गया (है यानी नऊ़ज़ुबिल्लाह कन्जूसी करने लगा) **है,** (असलीयत में) **उन्हीं के हाथ बन्द हैं** (यानी उन में ही कन्जूसी का ऐब है) **और अपने इस कहने से ये** (अल्लाह की) **रहमत से दूर कर दिये गये** (जिस का असर दुनिया में रूसवाई और क़ैद व क़त्ल और आख़रत में जहन्नम का अज़ाब है, और तौबा-तौबा कि अल्लाह तआ़ला में इसका शक भी हो) **बल्कि उन के तो दोनों हाथ खुले हुए हैं** (यानी बहुत देने वाले हैं

लेकिन अपनी हिकमत से) **जिस तरह चाहते हैं ख़र्च करते हैं** (बस यहूदियों पर जो तंगी हुई उस की वजह उन को उनके कुफ़्र का मज़ा चखाना है न कि इस की वजह कंजूसी है), **और** (यहूदियों के कुफ़्र व सरकशी की यह हालत है कि उन को तौबा की तौफ़ीक़ न होगी बल्कि) **जो हुक्म आप के पास आप के रब की तरफ़ से भेजा जाता है बहुत से लोगों की सरकशी और कुफ़्र उससे और बढ़ जाता है** (इस तरह से कि वो इस हुक्म का भी इनकार करते हैं तो कुछ पहली सरकशी और कुफ़्र था कुछ और बढ़ गया), **और** (इसलिए) **हम ने उन में आपस में** (दीन के बारे में) **क़ियामत तक के लिए दुशमनी और बैर डाल दिया** (है बस उन में बहुत से फ़िरक़े हैं और हर फ़िरक़ा दूसरे का दुशमन) **है,** (बस आपसी दुशमनी की वजह से) **जब कभी** (मुसलमानों के साथ) **लड़ाई की आग भड़काना चाहते हैं** (यानी लड़ने का इरादा करते हैं तो) **अल्लाह तआ़ला उस को बुझा देते हैं** (यानी वो डर जाते हैं या लड़ कर हार जाते हैं या आपसी झगड़े की वजह से मेल की नौबत नहीं आती) **और** (फिर अपनी दुशमनी दूसरी तरह निकालते हैं कि) **मुल्क में** (छुप कर) **फ़साद करते फिरते हैं** (जैसे नये मुसलमानों को बहकाना, लगाई बुझाई करना, आम लोगों को तौरेत की बदली हुई बातें सुना कर इस्लाम से रोकना), **और अल्लाह तआ़ला** (चूंकि) **फ़साद करने वालों को पसन्द नहीं करते** (इसलिए इस पर उन को ख़ूब सज़ा होगी चाहे दुनिया में भी वर्ना आख़रत में तो ज़रूर)(64) **और अगर ये किताब वाले** (यानी यहूदी व ईसाई रसूल और क़ुरआन पर) **ईमान ले आते और** (अल्लाह से) **डरते** (यानी गुनाहों से बचते) **तो हम ज़रूर सभी** (पिछली) **बुराइयां मुआफ़ कर देते और** (मुआफ़ करके) **ज़रूर उन को चैन** (और आराम) **के बाग़ों** (यानी जन्नत) **में दाख़िल करते(65) और अगर ये लोग तौरेत की और इन्जील की और जो किताब उन के रब की तरफ़ से** (अब) **उन के पास** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वास्ते से) **भेजी गयी** (यानी क़ुरआन) **उस की पूरी पाबन्दी करते तो ये लोग** (इस वजह से कि) **ऊपर** (यानी आसमान) **से** (पानी बरसता) **और नीचे से** (यानी ज़मीन से पैदावार होती) **ख़ूब तसल्ली से खाते** (बरतते, लेकिन कुफ़्र पर जमे रहे इसलिए तंगी में पकड़े गये, मगर) **उन** (ही) **में एक गिरोह सीधे रास्ते पर चलने वाला** (भी) **है** (जैसे यहूदियों में हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के साथी और ईसाइयों में हज़रत नजाशी और उनके साथी, लेकिन ऐसे थोड़े ही हैं), **और** (बाक़ी) **ज़्यादा उनमें ऐसे ही हैं कि उन के कारनामे बहुत बुरे हैं** (क्योंकि कुफ़्र से बदतर बुराई क्या होगी)(66) **ऐ रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **जो कुछ आप के रब की तरफ़ से आप पर उतारा गया है आप** (लोगों को) **सब पहुंचा दीजिए, और अगर** (मान लो) **आप ऐसा नहीं करेंगे तो** (ऐसा समझा

जाएगा जैसे) **आपने अल्लाह** (के दीन) **का पैग़ाम भी नहीं पहुंचाया, और** (तबलीग़ के बारे में काफ़िरों का कुछ डर न रखिए क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला आप** (की जान) **को लोगों से बचाएगा,** (और) **बेशक अल्लाह तआ़ला काफ़िरों को** (आप के क़त्ल की) **राह न देंगे**(67)।

नोटः- आख़री हज के मौक़े पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों से पूछा "क्या मैंने आप को दीन पहुंचा दिया, सहाबा किराम ने इक़रार किया कि ज़रूर पहुंचाया इस पर हुज़ूर ने कहा कि आप इस पर गवाह रहो" और यह भी कहा कि जो लोग यहां मौजूद हैं वो दूसरों तक मेरी बात पहुंचा दें। तो इससे साबित हुआ कि उम्मत पर दीन की तबलीग़ ज़रूरी है।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَیْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَ الْاِنْجِيْلَ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَ لَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّ كُفْرًا ۚ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۶۸﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ الَّذِيْنَ هَادُوْا وَ الصّٰبِئُوْنَ وَ النَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ عَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۶۹﴾

आयत न० 68 से 69

नोटः- इन आयतों में बताया गया है कि इस्लाम के सिवा कोई दूसरा तरीक़ा अल्लाह तआ़ला के यहां क़ुबूल नहीं है।

आप (इन यहूदियों व ईसाइयों से) **कह दीजिए कि ऐ किताब वालो तुम किसी राह पर भी नहीं** (क्योंकि जो राह क़ुबूल नहीं वो बेराही जैसी है) **जब तक कि तौरेत की और इन्जील की और जो किताब** (अब) **तुम्हारे पास** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वास्ते से) **तुम्हारे रब की तरफ़ से भेजी गई है** (यानी क़ुरआन) **उसकी** (भी) **पूरी पाबन्दी न करोगे, और** (ऐ पैग़म्बर चूंकि इन में ज़्यादतर लोग ज़िद्दी हैं इसलिए यह) **ज़रूर** (है कि) **जो हुक्म आप के पास आप के रब की तरफ़ से भेजा जाता है वो इन में से बहुत से लोगों की बग़ावत और कुफ़्र को बढ़ा देता है,** (और हो सकता है आप को इस बात से दुख हो तो) **आप इन काफ़िर लोगों** (की इस हालत) **पर ग़म न कीजिए**(68) **बेशक मुसलमान और यहूदी और साबिईन फ़िरक़े वाले और ईसाई** (इन सब में) **जो आदमी ईमान रखता हो अल्लाह तआ़ला** (की हस्ती व ख़ूबियों) **पर और क़ियामत पर और नेक काम करे ऐसे लोगों पर** (आख़रत में) **न किसी तरह का डर है और**

न वो दुखी होंगे(69)।

नोटः- अल्लाह पर ईमान रखने में उस के रसूल पर भी ईमान होना ज़रूरी है।

لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰۤى اَنْفُسُهُمْ ۙ
فَرِيْقًا كَذَّبُوْا وَ فَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ﴿۷۰﴾ وَ حَسِبُوْۤا اَلَّا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَ صَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَ
صَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۷۱﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ وَ
قَالَ الْمَسِيْحُ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَ رَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَ
مَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ وَ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۷۲﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ وَ مَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّاۤ
اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ وَ اِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۷۳﴾ اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى
اللّٰهِ وَ يَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۷۴﴾ مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَ
اُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿۷۵﴾ قُلْ
اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّ لَا نَفْعًا ؕ وَ اللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۷۶﴾

आयत न० 70 से 76

हमने (तौरेत में) **बनी इस्राईल से** (सभी पैग़म्बरों पर ईमान लाने और उन की ताबेदारी करने का) **एहद लिया और** (इस वादे के याद दिलाने को) **हम ने उनके पास बहुत पैग़म्बर भेजे,** (लेकिन उन की यह हालत थी कि) **जब कभी उन के पास कोई पैग़म्बर ऐसा हुक्म लाया जिस को उन का जी न चाहता था** (तब ही उन के मुख़ालिफ़ हो गये) **सो कुछ** (रसूलों) **को** (तो) **झूटा बताया और कुछ को** (बेधड़क) **क़त्ल ही कर देते थे(70) और** (उन की शरारतों पर जो कुछ दिनों की मोहलत दी गई तो) **ये ही समझे कि कुछ सज़ा न होगी तो इस** (सोच) **से और भी अन्धे और बेहरे** (की तरह) **बन गये** (कि न पैग़म्बरों की सच्चाई के सबूत को देखा न उन की बात को सुना) **फिर** (एक ज़माने के बाद) **अल्लाह तआ़ला ने** (अपनी रहमत से) **उन की तौबा क़ुबूल की** (और किसी दूसरे पैग़म्बर को भेजा कि अब भी राह पर आएं मगर) **फिर भी** (उसी तरह) **अन्धे और बहरे बने रहे** (यानी सब तो नहीं मगर) **उन में के बहुते से, और अल्लाह तआ़ला उन के** (उन बुरे) **कामों को अच्छी तरह देखते हैं(71) बेशक वो लोग काफ़िर हो चुके जिन्होंने यह**

कहा कि अल्लाह वो ही मसीह बिन मरयम (है यानी दोनो में जोड़) **है, हालांकि** (हज़रत) **मसीह ने ख़ुद कहा था कि ऐ बनी इस्राईल तुम अल्लाह तआ़ला की इबादत करो जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है** (यानी वो तो अपने आप को बन्दा कहते हैं), **बेशक जो आदमी अल्लाह के साथ** (ख़ुदाई में या ख़ुदाई ख़ूबियों में) **साझी ठहराएगा तो उस पर अल्लाह तआ़ला जन्नत को हराम कर देंगे और उसका ठिकाना** (सदा के लिए) **दोज़ख़ है, और ऐसे ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा** (कि दोज़ख़ से बचाकर जन्नत में पहुंचा सके)(72) **बेशक वो लोग भी काफ़िर है जो कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला तीन** (ख़ुदाओं) **में का एक है, हालांकि सिवाए एक** (सच्चे) **ख़ुदा के और कोई** (सच्चा) **ख़ुदा नहीं** (न दो और न तीन), **और अगर ये** (दोनो अक़ीदे के) **लोग अपने** (कुफ़्रिया) **बयानों से बाज़ न आए तो** (समझ लें कि) **जो लोग उनमें काफ़िर रहेंगे उन को** (आख़रत में) **दर्दनाक सज़ा होगी**(73) **क्या** (इन तौहीद की बातों को सुन कर) **फिर भी** (अपने इन अ़क़ीदों और बयानों से) **अल्लाह तआ़ला के सामने तौबा नहीं करते और उससे मुआफ़ी नहीं चाहते, हालांकि** (जब कोई तौबा करता है तो) **अल्लाह तआ़ला बड़े मुआफ़ करने वाले** (और) **बड़ी रहमत करने वाले हैं**(74) (हज़रत) **मसीह बिन मरयम तो** (ख़ुदा या ख़ुदा का हिस्सा) **कुछ भी नहीं सिर्फ़ एक पैग़म्बर हैं जिन से पहले और भी पैग़म्बर** (मोजिज़े वाले) **हो चुके हैं** (जिन को ईसाई भी ख़ुदा नहीं मानते बस पैग़म्बरी या करामतें ख़ुदाई की दलील नहीं), **और** (इसी तरह) **उन की मां** (भी ख़ुदा या ख़ुदा का हिस्सा नहीं बल्कि वो) **एक वली औरत** (हैं जैसे और औरतें भी वली हो चुकी) **हैं,** (और दोनों के ख़ुदा न होने के सबूतों में से एक आसान सबूत यह है कि) **दोनों** (हज़रात) **खाना खाया करते थे** (और जो इन्सान खाना खाता है वो उस का मुहताज होता है और मुहताज ख़ुदा नहीं हो सकता), **देखिए तो** (सही) **हम क्योंकर साफ़-साफ़ दलीलें उन से बयान कर रहे हैं फिर देखिये वो उल्टे किधर जा रहे हैं**(75) **आप** (उन से) **कह दीजिए क्या अल्लाह के सिवा ऐसी** (चीज़ों) **की इबादत करते हो जो न तुम को कोई नुक़सान और न नफ़ा पहुंचा सकें** (और बेबस ख़ुदा नहीं हो सकता), **हालांकि अल्लाह तआ़ला सब सुनते हैं जानते हैं** (फिर भी अल्लाह से नहीं डरते और अपने कुफ़्र व शिर्क से बाज़ नहीं आते)(76)।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِیْ دِیْنِكُمْ غَیْرَ الْحَقِّ وَ لَا تَتَّبِعُوْۤا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَ اَضَلُّوْا كَثِیْرًا
وَّ ضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِیْلِ ﴿۷۷﴾ لُعِنَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ عَلٰی لِسَانِ دَاوٗدَ وَ عِیْسَی ابْنِ مَرْیَمَ ؕ

ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّ كَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٧٨﴾ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٩﴾ تَرٰى
كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَ فِي الْعَذَابِ
هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَ لَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ النَّبِيِّ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَ لٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ
فٰسِقُوْنَ ﴿٨١﴾ لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَ لَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ
مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّا نَصٰرٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَ رُهْبَانًا وَّ اَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٨٢﴾

आयत न० 77 से 82

आप (इन ईसाइयों से) **कह दीजिए कि ऐ किताब वालो तुम अपने दीन** (के बारे) **में नाहक़ हद से मत निकलो और** (इस बारे में) **उन लोगों की सोच** (यानी बेसनद बातों) **पर मत चलो जो** (इससे) **पहले ख़ुद भी ग़लती में पड़ चुके हैं और** (अपने साथ) **बहुत से लोगों को** (लेकर डूबे और) **ग़लती में डाल चुके हैं और** (उन की वो ग़लती इस वजह से नहीं हुई कि सच्चाई का पता न लगता हो बल्कि) **वो लोग सीधे रास्ते** (के होते हुए जान बूझ कर उस) **से दूर** (और अलग) **हो गये थे** (यानी जब उन की ग़लती दलीलों से साबित हो गई फिर उन के पीछे क्यों चलते रहे)(77) **बनी इस्राईल में जो लोग काफ़िर थे उन पर** (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से सख़्त) **लानत की गई थी** (ज़बूर में हज़रत) **दाऊद** (अलैहिस्सलाम) **और** (इन्जील में हज़रत) **ईसा बिन मरयम** (अलैहिस्सलाम) **की ज़बान से,** (और) **यह** (लानत) **इस वजह से हुई कि उन्होंने हुक्म नहीं माना** (यानी ऐतक़ाद में ग़लती पर थे जो कि कुफ़्र है) **और** (इस नाफ़रमानी में) **हद से** (बहुत दूर) **निकल गये** (यानी कुफ़्र भी सख़्त था)(78) **जो बुरा काम** (यानी कुफ़्र) **उन्होंने अपना रक्खा था उससे बाज़ न आते** (थे बल्कि उस पर जमे) **थे, सचमुच उन का** (यह) **काम** (यानी कुफ़्र) **बेशक बुरा था** (कि उस पर यह सज़ा जारी हुई)(79) **आप इन** (यहूदियों) **में बहुत से आदमी** (ऐसे) **देखेंगे कि** (मुशरिक) **काफ़िरों से दोस्ती करते हैं** (जैसा कि मदीने के यहूदियों में और मक्के के मुशरिकों में मुसलमानों की दुशमनी की वजह से दोस्ती थी)**, जो काम उन्होंने आगे** (भुगतने) **के लिए किया है** (यानी कुफ़्र और मुसलमानों से दुशमनी) **बेशक वो बहुत बुरा है कि** (इस की वजह से) **अल्लाह तआ़ला उन पर** (सदा के लिए) **नाराज़ हो गया है और** (इस सदा की नाराज़ी का नतीजा यह होगा कि) **ये लोग अज़ाब में सदा रहेंगे**(80) **और अगर ये** (यहूदी) **लोग अल्लाह पर ईमान रखते और पैग़म्बर** (यानी मूसा अलैहिस्सलाम) **पर** (ईमान रखते जिस का वो दावा करते हैं) **और उस**

किताब पर (ईमान रखते) **जो उन** (पैग़म्बर) **के पास भेजी गई थी** (यानी तौरेत) **तो उन** (मुशरिकों) **को दोस्त न बनाते लेकिन इन में ज़्यादा लोग ईमान से ख़ाली** (हैं इसलिए काफ़िरों के साथ इन का मेल हो गया और दोस्ती रखते) **हैं**(81) **सभी** (ग़ैर मुस्लिम) **लोगों में सबसे ज़्यादा मुसलमानों से दुशमनी रखने वाले आप इन यहूदियों और इन मुशरिकों को पाएंगे, और इन** (ग़ैर मुस्लिम लोगों) **में मुसलमानों के साथ दोस्ती रखने में सबसे ज़्यादा नज़दीक** (औरों के मुक़ाबिले) **उन लोगों को पाएंगे जो अपने को ईसाई कहते** (हैं नज़दीक का यह मतलब है कि दोस्त तो वो भी नहीं मगर दूसरे काफ़िरों से बेहतर) **हैं, यह** (दोस्ती से नज़दीक होना दुशमनी में कम होना) **इस वजह से है कि इन** (ईसाइयों) **में बहुत से इल्म दोस्त आलिम हैं और बहुत से दुनिया छोड़ने वाले फ़क़ीर** (यानी सूफ़ी सन्त) **हैं और इस वजह से है कि ये** (ईसाई) **लोग घमन्ड़ नहीं करते** (कि दूसरों की बात पर ध्यान देने के लिए तैयार न हों)(82)।

नोटः- चूंकि यहूदियों के मुक़ाबिले ईसाई नर्म मिज़ाज ख़ुदा तरस और मुसलमानों से दुशमनी में कम और ज़िद्दी और घमन्डी नहीं इसलिए बात सुनते और समझते हैं और इनमें से बहुत से लोग ईमान भी ले आते हैं जैसा कि आगे आता है।